अक्तूबर 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

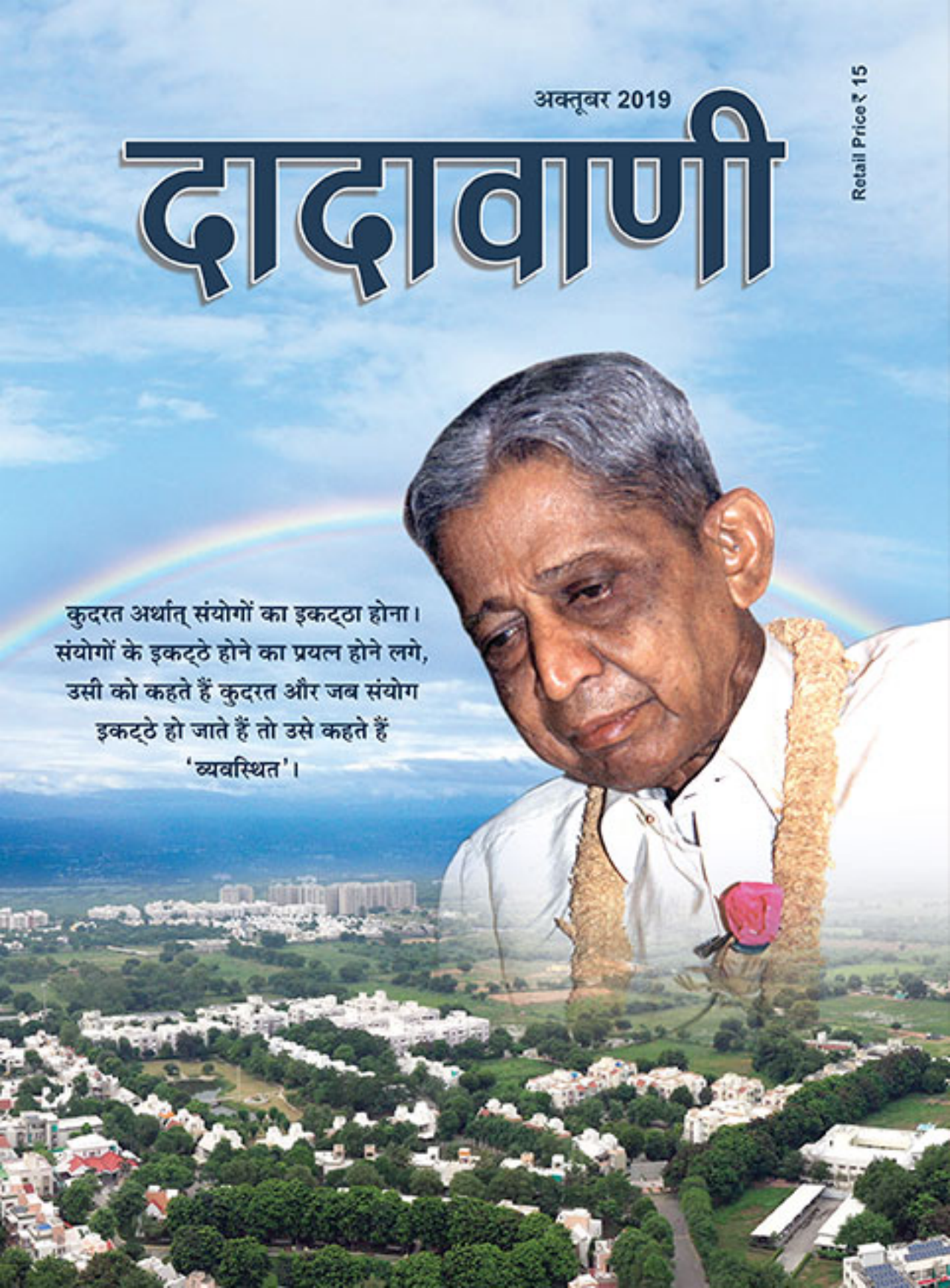

कुदरत अर्थात् संयोगों का इकट्ठा होना। संयोगों के इकट्ठे होने का प्रयत्न होने लगे, उसी को कहते हैं कुदरत और जब संयोग इकट्ठे हो जाते हैं तो उसे कहते हैं 'व्यवस्थित'।

वर्ष : 14 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 168
अक्तूबर 2019
पृष्ठ - 36

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अनंत जन्मों की खोज : व्यवस्थित शक्ति

अमे खुद मोक्ष रोक्यो तो, 'व्यवस्थित' शोधने काजे,
अबज वर्षो जे गुप्त हतुं, ते नीकळ्युं विश्वमां आजे।

जगत् संचालक 'व्यवस्थित शक्ति', यह विषय अति गहन और गुह्य है। परम पूज्य दादाश्री कहते हैं, 'हमें मोक्ष मिल रहा था, लेकिन हमने रोका, इस व्यवस्थित की खोज के लिए!' अनंत जन्मों से यही ढूँढ रहा था कि यह जगत् किस आधार पर चल रहा है? इसीलिए यह अपूर्व अक्रम ज्ञान प्राप्त हुआ। जगत् को सटीक और सरल मोक्षमार्ग प्रदान किया और मुमुक्षुओं को एक घंटे में भेदज्ञान प्रयोग से आत्मा की प्राप्ति कराई।

'व्यवस्थित' की आज्ञा, कर्तापद काढे,
न कर्मबंध एक, 'दादा' गेरन्टी आपे।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' इस ज्ञान प्राप्ति के बाद में, इस काल में इतने से ही सब काम हो, ऐसा नहीं है। संसार व्यवहार में रहकर नौकरी-व्यापार करते हुए आत्मा में रहना है, जहाँ वापस कर्तापन आ जाता है, वहाँ पर यह व्यवस्थित का ज्ञान अकर्ता पद में रखता है! परम पूज्य दादाश्री द्वारा दी गई पाँच आज्ञा कर्म बंधन किए बिना संसार व्यवहार को पूर्ण करवाकर एकावतारी पद प्राप्त करवाने में समर्थ है।

आप्तसूत्रों टचूकडा पण होय सिद्धांतमय,
कर्ता नथी कोई विश्वनो, ते ज्ञान पोते मूळ मुद्दो।

व्यवस्थित के इस गुह्य विज्ञान को समझने के लिए परम पूज्य दादाश्री ने आप्तसूत्रों के माध्यम से सिद्धांत के अनेक मोती दिए हैं। उनमें से इस अंक में हम व्यवस्थित शक्ति के कुछ बेसिक आप्तसूत्रों का अभ्यास करेंगे। सूत्रों के रूप में गुंथी हुई वाणी, द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव की सीमा से परे हैं। ज्ञानी के प्रत्येक शब्द, मुद्दे और चेष्टा में अद्‌भुत रहस्य छुपा हुआ है। बार-बार उसका श्रीमद् राजचंद्र ने अभ्यास करने को कहा है। ज्ञानी का हर एक वाक्य शास्त्र है और वे सूत्र अर्थात् 'थोड़े में काफी कुछ', सीधा सोना ही समाया हुआ है, ऐसा समझना है।

यहाँ प्रस्तुत अंक में व्यवस्थित शक्ति की खोज किस तरह से हुई, किसने बनाई, व्यवस्थित का दर्शन, उसका गठन, व्यवस्थित शब्द किस तरह से स्फुरित हुआ, व्यवस्थित शक्ति कम्प्यूटर जैसी है, व्यवस्थित और भाव की लिंक, व्यवस्थित की केवलज्ञान के साथ की लिंक वगैरह ये सूत्र दादाश्री की वाणी द्वारा संकलित हुए हैं। महात्माओं को 'व्यवस्थित शक्ति' के ये सूत्र हृदयगत हो जाएँ, साथ ही 'व्यवस्थित शक्ति' के विज्ञान को समझकर तीसरी आज्ञा पालन करने का पुरुषार्थ हो सकें और अनुभव की श्रेणियाँ चढ़ी जा सके, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अनंत जन्मों की खोज : व्यवस्थित शक्ति

आप्तसूत्र- 2544

'मैं' जन्म से ही 'व्यवस्थित' का ज्ञान लेकर आया था! यह 'मेरी' अनंत जन्मों की खोज है!

प्रश्नकर्ता : दादा, 'व्यवस्थित' कहाँ से ढूँढ लाए आप? यह जो व्यवस्थित है, उसके क्या कॉज़ (कारण) थे डले?

दादाश्री : यह मैं कई जन्मों से ढूँढ रहा था कि यह किस आधार पर चल रहा था। लोग कहते हैं कि 'मेरे कर्म चलाते हैं', तो भाई, सूर्य-चंद्र की व्यवस्था किसने की? ये सारी परेशानियाँ होती हैं तो वास्तव में कौन है? हू इज़ द रिस्पोन्सिबल (कौन ज़िम्मेदार है)? तो यह व्यवस्थित यानी कई जन्मों की खोज है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने से पहले से भी यह दिखाई देता था?

दादाश्री : शुरू से ही ऐसा तय किया था कि इस सत्य को जाने बिना मोक्ष में नहीं जाना है कि 'इस जगत् को चलाने वाला वास्तव में कौन है?' लोग कहते हैं कि अपने कर्म के उदय हैं तो कर्मो के उदय सिर्फ, मुझ पर ही लागू होते हैं। उसमें सूर्य व चंद्र को क्या लेना-देना? ये चांद-तारे वैसे के वैसे ही रहते हैं। यह पूरी इतनी बड़ी दुनिया किस तरह चल रही है? इसलिए 'व्यवस्थित' नाम की शक्ति है, जो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (वैज्ञानिक संयोगिक प्रमाण) है और वह हमने समझने के बाद दिया है। यह तत्काल ही फलदायी है, अव्यवस्थित होता ही नहीं है इस दुनिया में। फिर झंझट ही कहाँ रही?

बहुत उच्च प्रकार की खोज दी है, इस काल में। इसलिए हमने कहा है न, कि 'अस्सी हज़ार सालों तक इस का ज्ञान प्रभाव रहेगा', उसके बाद जब तीर्थंकर होंगे तब यह प्रभाव खत्म हो जाएगा। जब तीर्थंकर होते हैं तो अन्य किसी की ज़रूरत नहीं रहती। जब तक ऐसे पुरुष नहीं होते तब तक लोग इन उलझनों को कैसे निकालें? दिन ही कैसे बिताएँ? अंदर यदि उल्टे विचार आएँ तो वह दिन कैसे बिताया जाए?

हमें भी यह पता नहीं था कि ऐसा कोई ज्ञान प्रकट होना है। लेकिन यह व्यवस्थित हमारी कई जन्मों की खोज थी। कितने ही जन्मों तक तो हम कोई भी क्रिया किए बगैर ही इस संसार में रहे हैं। यह देखने और जाँचने के लिए कि यह चलेगा या फिर बंद हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कोई भी क्रिया किए बगैर?

दादाश्री : यानी कि सारा हिसाब लगाने

के बाद में पता चला कि दिस इज़ द फेक्ट (यह सही है)। उसके बाद में आपको यह फेक्ट दिया है। यदि यों ही दे दें तो लोग मारे जाएँगे। उसे ऐसा कहेंगे कि उल्टे रास्ते पर ले गए।

अनंत जन्मों से जो किया है, उसका यह फल आया है। व्यवस्थित की हमारी यह सब से बड़ी खोज है। शायद ही कभी बहुत मुश्किल से ही ऐसा होता है!

ऐसा है न, कि यदि पड़ोस में कोई न हो, अकेला ही हो न, तो उसे सुझाने वाला अंदर ही है। लेकिन यदि सब साथ में हो तो कौन सुझाएगा? जब अकेला होता है तब सारी सूझ पड़ती है। इस जगत् में अकेला नहीं है, उसी की तो झंझट है न, और मैं अकेले ही घूमा हूँ। क्योंकि बचपन से ही मेरा स्वभाव ऐसा था कि एक रास्ता, यदि यहाँ से कोई रास्ता निकले, यहाँ से घूमकर यों जा रहा हो न तो मेरी दृष्टि से तुरंत ही समझ में आ जाता था कि यह गलत है, यह रास्ता उल्टा है। बचपन से ही यह आदत थी कि लोगों के रास्ते पर नहीं चलना है। अपने सोचे हुए रास्ते पर ही चलाना है, उसके लिए मार भी पड़ी कितनी ही बार, काँटे भी चुभे। लेकिन फिर भी ऐसा तय था कि इसी रास्ते से जाना है। तो उसमें यह रास्ता हमें रास आ गया। कई जन्मों तक मार पड़ी होगी लेकिन अंत में ढूँढ निकाला, यह बात पक्की है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि शुरू से ही आप में जिज्ञासा थी।

दादाश्री : हाँ, शुरू से ही।

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म से?

दादाश्री : वह कई जन्मों से, पिछले जन्म से नहीं और इस हद तक की जिज्ञासा कि भविष्य की चिंता नहीं होनी चाहिए! यदि जन्म मिला है तो भविष्य की चिंता क्यों होनी चाहिए? अत: इस व्यवस्थित की खोज कर लाया हूँ।

यह सारा हमारा अनुभव ज्ञान है। हमारी अनुभव श्रेणी में आया हुआ ज्ञान है। वर्ना, कोई ऐसा नहीं कह सकता न, कि भाई, अब, आपका व्यवस्थित है। चिंता करना बंद नहीं करवा सकता न! किसी ने ऐसा नहीं कहा कि व्यवस्थित है।

आप्तसूत्र- 3720

हमारे अनंत जन्मों का सार 'यह' है। मैं 'जो' लेकर आया हूँ, वह अनंत जन्मों का सार निकालते निकालते निकालते निकालते... लाया हूँ। यह सार है, 'व्यवस्थित'! 'आइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स!' जो संसार को चलाता है!

यह जगत् किस तरह से चलता है? कितने ही जन्मों की यह खोज लेकर लाया हूँ। वर्ना, लोग तो बूझ ही नहीं सकते न! कैसे बूझेंगे? और एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित ही है! जहाँ से आप देखो वहाँ से। सभी प्रकार से ताल मिल जाते हैं और त्रिकाल अविरोधाभासी है, किसी भी काल में इसका विरोध नहीं होगा। यह ज्ञान, ज्ञान कहलाता है। यदि विरोधाभास हो तो वह ज्ञान नहीं कहलाएगा।

यह व्यवस्थित बहुत समझने जैसा है और एक्ज़ेक्ट सब वैसा ही है। यदि थोड़ा बहुत इधर-उधर होता न तो किसी भी तरफ से शिकायत करता हुआ आता कि 'व्यवस्थित' ने मुझे यहाँ पर रुकावट डाली!

यह तो, जीवन ऐसा बना देता हूँ कि कभी भी चिंता न हो, यदि 'एक भी चिंता हो तो मुझ पर दो लाख का दावा दायर करना', ऐसा कहता हूँ? यह शर्त इन्हें भी बताई है। इन सभी को बता दी है। तो यह तो बहुत बड़ी बात कही जाएगी न!

प्रश्नकर्ता : दादा, तब फिर यह बताइए न, कि यह समाधि कितने समय से है, कितने जन्मों से चली आ रही है?

दादाश्री : कितने ही समय से ये समाधि लेकर आया हूँ, लेकिन मैं ढूँढ तो कुछ और रहा था। इस जगत् का आधार क्या है? ज्ञान तो शुद्धात्मा का हुआ लेकिन यदि आपको यह व्यवस्थित नहीं दिया होता न तो आप फिर से उलझन में पड़ जाते। क्या आपको ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : व्यवस्थित को खोजने के लिए बहुत समय तक घूमा हूँ। क्योंकि यदि वह है, तो हमें उतनी शांति हो जाती है। जब तक यहाँ पर बैठे हो तब तक मन में ऐसा लगे न, कुछ विचार आएँ तब कहता है, 'व्यवस्थित है।' शांति रहती है या नहीं? और वैसा ही है, वह ढूँढ निकाला है मैंने। एक्ज़ेक्ट खोजकर लाया हूँ।

एक तो यह पद ही नहीं होता, यह अक्रम विज्ञानी का पद! यह तो हम निमित्त बन गए। ये किसी के हिस्से में ही नहीं आता न। यह हमारे हिस्से में आ गया, वह भी आश्चर्य है! क्योंकि हमने यह हिसाब ढूँढ निकाला न, ऐसी व्यवस्थित की खोज हम लेकर ही आए थे।

हमें भी मोक्ष मिल रहा था, लेकिन हमने मना कर दिया। हमने रोक दिया था। इस व्यवस्थित की खोज की खातिर, कि 'भाई, ऐसा नहीं होना चाहिए। क्या इन सभी के साथ में इस तरह से मोक्ष हो सकता है। इस संसार में सब छोड़ना कैसा हो सकेगा?' लेकिन यह प्रमाणित हो गया है। अपवाद कहलाता है यह। अपवाद, यह मुख्य मार्ग नहीं है। मुख्य मार्ग नहीं है। 'क्रमिक मार्ग' मुख्य मार्ग है। लेकिन अपवाद में भी काम हो जाता है न! अपनी तो झंझट ही मिट गई न, छोड़ने की! वर्ना कब छोड़ते? ऐसा कहता हूँ कि 'टेस्ट से खाओ।' जबकि लोग क्या कहते हैं, कि 'अगर ऐसा कह रहे हो तो मोक्ष में कैसे जा पाएँगे?' उन्हें क्या पता है कि कौन खा रहा है और कौन देख रहा है। उन्हें यह पता नहीं है। वह खुद ऐसा ही समझता है कि खुद ही खा रहा है!

प्रश्नकर्ता : आपमें 'व्यवस्थित' शब्द किस प्रकार से स्फुरित हुआ?

दादाश्री : वह तो मैं कितने ही जन्मों से ऐसा ढूँढ रहा था कि ऐसे साधु बनकर हमें अकेले मोक्ष में नहीं जाना है। घर के सभी लोगों को छोड़कर हमें मोक्ष में नहीं जाना है। और फिर संसार कहाँ बाधक है? संसार का क्या दोष है, बेचारे का?

इस जन्म में कौन बाधक है? कर कौन रहा है? इसी खोज में पड़ा था कितने ही जन्मों से। मैं जो लेकर आया हूँ न, वह बहुत जन्मों का सार लेकर आया हूँ। सार निकालते-निकालते लाया हूँ। कर्ता कौन? मैंने यह 'व्यवस्थित कर्ता' दिया। यह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स, वह मेरा अनुभवपूर्वक देखा हुआ है।

'ज्ञान' यदि सिर्फ, 'ज्ञानी' के पास ही रहे तो ज्ञान रसातल में चला जाएगा। 'ज्ञान' तो प्रकट

करना ही चाहिए। प्रकाश वाला दीया शायद ही कभी प्रकट होता है। तब तक घोर अंधकार रहता है। यह तो सूरत के स्टेशन पर 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' के आधार पर कुदरती रूप से प्रकट हुआ है! 'दिस इज़ बट नैचुरल (यह कुदरती है)!' तो फिर उसमें से जितने दीये तैयार करने हो उतने हो सकते हैं। बाकी दीये में घी तो सभी लोगों ने डाला हुआ है।

व्यवस्थित कोई गप्प नहीं है। गप्प नहीं चलेगी। आज्ञा के रूप में नहीं दिया जा सकता, व्यवहारिक शब्द आज्ञा के रूप में नहीं दिया जा सकता। यह निश्चय-व्यवहार वाला शब्द है।

प्रश्नकर्ता : आपने इस व्यवस्थित का पूरा दर्शन देखा होगा न?

दादाश्री : हाँ, उस दर्शन को देखने के बाद ही दिया है। हमें पूरी तरह से समझ में आने के बाद ही दिया है।

हाँ। दर्शन, और फिर उसके शब्द भी दिए हैं मैंने। उससे आगे समझाया नहीं जा सकता, यह दर्शन फिर शब्दों में जितना समझाया जा सकता है उतना हमने समझाया। 'ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' तो काफी कुछ आ जाती है वह चीज़! और इसके अलावा अन्य कोई निमित्त नहीं है। हम उसे ऐसी एक्ज़ेक्टनेस देते हैं। यदि आप व्यवस्थित बोलोगे, इस व्यवस्थित का यदि यथार्थ रूप से उपयोग करोगे तो आपको किसी भी तरह की बोदरेशन नहीं रहेगी। आपको अंदर निराकुलता रहेगी और निरंतर समाधि में रखे, ऐसा है यह।

प्रश्नकर्ता : समाधि रहेगी, उसमें कोई शंका नहीं है।

दादाश्री : इस व्यवस्थित के ज्ञान के बिना तो... लोग मोक्षमार्ग बहुत प्राप्ति नहीं कर पाते, उसका कारण यही है। यह हमारी बहुत समय की खोज है। मैंने तो शुरू से ही तय किया था कि इसका पता चलने के बाद ही आगे बढ़ना है, वर्ना नहीं। तब तक मोक्ष में नहीं जाना है। यह किस आधार पर चल रहा है? कौन चला रहा है यह?

तो फिर कर्ता कौन है, किस तरह से चल रहा है जगत्? उसका यह सार आया है। धन्य भाग्य इस काल में कि यह सार आया है। जगत् को यदि समझ जाए तो काम निकाल लेगा ऐसा है। अरे, आराम से सो जाएगा, व्यवस्थित कह कर। अगर कोई नापसंद व्यक्ति आ जाए तो अपना ज्ञान हाज़िर हो जाता है, व्यवस्थित हाज़िर हो जाता है। इसलिए फिर उसे उस व्यक्ति के प्रति कोई नापसंदगी नहीं रहती। क्योंकि जान जाते हैं कि यह किसने किया। क्या इन्होंने किया? तो कहते हैं, 'नहीं, इन्होंने नहीं किया।' अत: उनके प्रति नापसंदगी नहीं रहती। यह व्यवस्थित का ज्ञान किसी भी जगह पर राग-द्वेष नहीं करने देगा। कुछ अत्यंत नापसंद आए तो तुरंत ज्ञान हाज़िर हो ही जाता है कि 'व्यवस्थित' है।

आप्तसूत्र- 3901

'व्यवस्थित' अर्थात् क्या? ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है?

यह तो मैं, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स कैसे इकट्ठे होते हैं, वह सब देखकर बता रहा हूँ।

ये मेरे मुँह से जो अंग्रेज़ी शब्द निकल गए हैं, ये तो कुदरती निकल गए हैं। ये मेरी पढ़ाई

की वजह से नहीं। पढ़ाई में तो मैं मेट्रिक फेल हूँ, लेकिन यह ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स और 'द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इट सेल्फ' ऐसा सब बोलता हूँ न, वह अपने आप ही कुदरती रूप से निकल जाता है।

बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग मुझसे पूछते हैं कि ''दादा, हम इतने पढ़े-लिखे ग्रेज्युएट हैं फिर भी अभी तक हमें 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' शब्द बोलना नहीं आता। आप किस तरह से बोल लेते हैं? आप कहाँ तक पढ़े हैं?'' मैंने कहा, 'मेट्रिक फेल हूँ' तब कहने लगे, 'यह तो दाँतों तले उँगली दबाने जैसा लगता है' लेकिन ये शब्द तो अपने आप कुदरती रूप से निकल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप जितनी भी अंग्रेज़ी बोलते हैं, उतनी बहुत एक्ज़ेक्ट है।

दादाश्री : हाँ, एक्ज़ेक्ट है, लेकिन वह कुदरती रूप से निकल जाता है।

यह कुदरती विज्ञान कितना अच्छा है! यह कुदरत का विज्ञान है। साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स, आगे जाकर जब लोग इसका पृथक्करण करेंगे न, तब समझ में आएगा कि इसके बिना कोई चीज़, पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह जो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स कहा है न, वह बहुत बड़ा वाक्य कहा है। जब इसका अर्थ समझने वाले व्यक्ति निकलेंगे, तब वह समझ में आएगा।

वह व्यवस्थित किस तरह से हैं, ऐसा सिर्फ हमने ही ज्ञान में देखा है। शब्दों द्वारा उसका वर्णन करने के लिए हमें उसे साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स कहना पड़ा, क्योंकि उसके लिए गुजराती का शब्द ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : अर्थात् यह साइन्स का मार्ग है। वैज्ञानिक कहूँगा तो वैज्ञानिक समझ में नहीं आएगा। दो-तीन बार बताने से तो लोग तुरंत ही समझ जाते हैं। क्योंकि छोटे-छोटे उदाहरण सहित समझाते हैं न और मेरा हिसाब मिल गया न, इसीलिए। क्योंकि जिस हिसाब को ढूँढ रहा था, वह मिल गया। उसके बाद ही लोगों को यह दिया।

आप्तसूत्र- 2710

'व्यवस्थित' शक्ति किसने बनाई? किसी ने नहीं बनाई है। परीक्षा का 'रिज़ल्ट' कौन देता है? अपना ही लिखा हुआ, उसी का 'रिज़ल्ट' आता है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित शक्ति किसने बनाई?

दादाश्री : किसी ने नहीं बनाई है ऐसा है न, कि जैसे कोई व्यक्ति परीक्षा देता है तो परीक्षा देने के बाद 'रिज़ल्ट' अपने आप ही आ जाता है या कुछ करना पड़ता है? तो यह 'रिज़ल्ट' है। इस परीक्षा का 'रिज़ल्ट' कौन देता है?

प्रश्नकर्ता : प्रिन्सिपल (आचार्य) देते हैं।

दादाश्री : प्रिन्सिपल नहीं देते। हमने जो परीक्षा में लिखी है न, वही हमें रिज़ल्ट देती है। फिर बाकी सब बातें अलग है।

उसी तरह यह अपना ही जो अवस्थित है, वही यह व्यवस्थित है अपने लिखे हुए का ही रिज़ल्ट है। यों देखने में ऐसा लगता है कि प्रोफेसर हमें रिज़ल्ट देते हैं।

हम परीक्षा देकर, घर आने के बाद में उस पर सोचते रहें तो कोई क्या कहेगा? 'सब

व्यवस्थित है। अब उस बात को छोड़कर कुछ और कर।' व्यवस्थित होता है या नहीं? रिज़ल्ट तो व्यवस्थित में आता है या नहीं? परीक्षा देने के बाद में जो भी होता है, वह व्यवस्थित है या अव्यवस्थित?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित!

दादाश्री : बस, रिज़ल्ट है यह। यह दुनिया तो रिज़ल्ट है, इसलिए व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : जिसे हम 'व्यवस्थित' कहते हैं और 'शुद्धात्मा' कहते हैं। क्या उससे इसका कोई भी रिलेशन (संबंध) नहीं है?

दादाश्री : रिलेशन इतना ही है कि परीक्षा का परिणाम आएगा। और परिणाम का कोई कर्ता नहीं है। बस उसी का यह परिणाम!

प्रश्नकर्ता : यानी कि यह सब शुद्ध चेतन में ही है न, उसी में से ये सारे एक्शन-रिएक्शन (क्रिया-प्रतिक्रिया) होते रहते हैं?

दादाश्री : वह उसमें भी नहीं है, अलग ही है।

आप्तसूत्र- 3717

'व्यवस्थित' पर 'व्यवस्थित' की सत्ता भी नहीं है। 'व्यवस्थित' तो सिर्फ 'रिज़ल्ट' देता है! यदि 'व्यवस्थित' की सत्ता होती तो वह कहता है कि 'मेरी वजह से ही सब चल रहा है!' यदि भगवान की सत्ता होती तो 'रौब' जमाने लगते! कोई भी ऐसा नहीं कह सकता। जगत् सिर्फ निमित्त से ही उत्पन्न हुआ है!

प्रश्नकर्ता : इस दुनिया का सबकुछ व्यवस्थित शक्ति ही चलाती है न? आपका ऐसा कहना है न?

दादाश्री : नहीं, नहीं। तब तो अहंकार हो जाता न! तब तो व्यवस्थित शक्ति कहती कि 'मेरी वजह से ही सब चल रहा है।' अत: कोई एक कारण नहीं चलाता। भगवान को भी चलाने की छूट नहीं है। किसी को भी छूट नहीं है। सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्सस के मिलने से ही काम होता है। कोई ऐसा नहीं कह सकता कि यह 'मैंने किया।'

प्रश्नकर्ता : तो ये तूफान, आँधी, बरसात भी 'व्यवस्थित' है?

दादाश्री : हाँ, व्यवस्थित है। यह सब व्यवस्थित का ही है! और यह 'व्यवस्थित' भी कोई आज की क्रिया नहीं है। वह भी 'व्यवस्थित' के ताबे में नहीं है। 'व्यवस्थित' 'व्यवस्थित' के ताबे में भी नहीं है, वह भी परिणाम है। जिस प्रकार से परीक्षा का रिज़ल्ट देना, क्या प्रोफेसर के ताबे में है?

प्रश्नकर्ता : मार्क्स देने तक तो उनके हाथ में है!

दादाश्री : नहीं। जिस दिन रिज़ल्ट देना हो उस दिन उनके ताबे में है? रिज़ल्ट घोषित करते समय कोई अधिकार रहता है किसी तरह का? तो इसी तरह 'व्यवस्थित' रिज़ल्ट घोषित करता है और 'व्यवस्थित' की भी सत्ता नहीं है उसमें तो! यदि 'व्यवस्थित' की सत्ता होती न तो वह कहता कि 'मेरी वजह से यह सब चल रहा है।' यदि भगवान का इस में कुछ होता तो भगवान भी रौब मारते कि 'मैं हूँ इसलिए यह सबकुछ चल रहा है।' अत: कोई कुछ भी नहीं

कह सकता, सब बिल्कुल चुप! इस प्रकार का है यह जगत्! सिर्फ निमित्त से ही, इसके निमित्त से ऐसा और इनके निमित्त से ऐसा। अत: कोई भी ऐसा नहीं कह सकता कि मैंने ये जगत् उत्पन्न किया है और मेरी वजह से ही चल रहा है। वर्ना वह चढ़ बैठता, कब से ही चढ़ बैठता, मालिक बनने जाता! अत: यह एक बहुत गहरी बात है। यह तो सिर्फ ज्ञानियों ने ही देखा हुआ है। आपको तो बुद्धि से समझ में आता है। आपको बुद्धि से कुछ हद तक समझ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : खुद के कर्म के अनुसार व्यवस्थित शक्ति चलाती है, क्या ऐसा कहा जा सकता है?

दादाश्री : व्यवस्थित शक्ति का कोई आधार ही नहीं है। व्यवस्थित शक्ति किसी के आधार पर नहीं है। व्यवस्थित शक्ति अर्थात् वह खुद ही परिणाम है। 'पास होना और फेल होना' किसी की शक्ति नहीं है। परीक्षा देने वाले ने परीक्षा दी, उसका यह परिणाम है। परीक्षा देना किसी की शक्ति है और परिणाम देना वह किसी की भी शक्ति नहीं है। ऐसा है न, कि यदि हम सूर्य की गर्मी में घूमें तो उस समय गर्मी कौन देता है?

प्रश्नकर्ता : स्वभाव है।

दादाश्री : किसी की भी ज़रूरत नहीं है। यदि आपको गर्मी की ज़रूरत नहीं है तो आप छाता लेकर घूमो। ठंडक कौन देता है? छाता देता है। उसके लिए आपको किसी देने वाले की ज़रूरत नहीं है, वह रिज़ल्ट है। रिज़ल्ट में कोई देने वाला नहीं होता। परीक्षा देने के बाद फिर उसका रिज़ल्ट देने में, क्या भगवान की ज़रूरत है? उसमें उसने जैसा लिखा होगा वैसा ही आएगा। वह इफेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : समझ में आया। पहले ऐसा पता था कि व्यवस्थित शक्ति ही पूरा विश्व चलाती है।

दादाश्री : नहीं, नहीं। जगत् किसी एक कॉज़ की वजह से नहीं चलता, सभी कॉज़ेज़ के इकट्ठे होने से चलता है। लोग तो खुद की सत्ता ढूँढते हैं, लेकिन यह तो परिणाम सत्ता है। और हम में सत्ता हो भी नहीं सकती। यह तो परिणाम है, परीक्ष में अच्छा लिखा हो तो परिणाम में खुश होकर घूमता है। जबकि दूसरा बिगड़ा हुआ मुँह लेकर घूमता है।

प्रश्नकर्ता : यह परिणाम सत्ता है, यह बात हमें ही समझनी है न! जिसने 'ज्ञान' लिया है उसी को। बाहर के लोगों को पता ही नहीं चलेगा न!

दादाश्री : उनके पास भी परिणाम सत्ता ही है, लेकिन उन्हें पता ही नहीं है न! वे तो ऐसा ही समझते हैं कि 'यह सब हम ही कर रहे हैं।' परिणाम का कोई कर्ता हो सकता है क्या? जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ भी होगा वह सब आवश्यक है और वह परिणाम के रूप में ही है। उसमें हम कर्ता मानते हैं, इसलिए अगले जन्म का बीज डालता है।

आप्तसूत्र- 3902

अवस्था मात्र कुदरती रचना है, जिसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है और वह 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' स्वाभाविक है और अनंत काल तक का है। यह ऐसा नहीं है कि किसी को बनाना पड़े।

पूरे संसार के मनुष्य, मन-वचन-काया की अवस्था को खुद की क्रिया मानते हैं। रियली स्पीकिंग खुद (वास्तव में कहें तो) किंचित्मात्र भी कर्ता रूपी है ही नहीं। सभी अज्ञान दशा से स्पदंन है और वे कुदरती रचना से उत्पन्न हुए हैं। उनका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है। यह दादा ने खुद देखकर बताया है।

'मन-वचन-काया की अवस्था मात्र कुदरती रचना है जिसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है और वह व्यवस्थित है।' हाँ, यदि इतना ही आ गया न तो उसके अड़तालीस आगम पूर्ण हो गए! उस वाक्य में इतना क्या सार है?

प्रश्नकर्ता : सभी अवस्थाएँ व्यवस्थित के अधीन हैं इसलिए।

दादाश्री : अर्थात् अवस्था मात्र कुदरती रचना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे संयोगों के आधार पर ही न?

दादाश्री : हाँ, संयोगों के आधार पर ही न! अर्थात् साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है यह। इतना ही यदि समझ में आ जाए न तो अड़तालीस आगम आ जाएँगे संसार में हमें किसी की भी भूल नहीं दिखाई देती, उसका क्या कारण है? क्योंकि हमें पूर्ण ज्ञान हाज़िर रहता है। आपको यदि यह एक ही वाक्य हाज़िर रहे न तो किसी की भूल दिखाई ही नहीं देगी।

'अवस्था मात्र कुदरती रचना है', ऐसा जब फिट हो जाएगा तब आत्मज्ञान उत्पन्न होगा।

आप फिर से यह वाक्य बोलिए न।

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया की अवस्था मात्र कुदरती रचना है।

दादाश्री : उसका कोई 'बाप भी' रचने वाला नहीं है। 'बाप भी' कहा, अत: लोगों को बहुत मज़ा आता है। क्योंकि फिर डर निकल जाता है। कोई बाप भी नहीं है तो क्यों, व्यर्थ ही डरते हो बिना बात के! इसने किया और फलाना ने किया, वर्ना ग्रहों ने किया ऐसा कहता है। अरे, ग्रह खुद के घर बैठे रहेंगे या यहाँ आएँगे? ग्रह क्यों करेंगे बेचारे? सब अपने-अपने घर में रहते हैं। सूर्यनारायण अपने घर में रहते हैं। वे सब अपना-अपना, खुद का स्वभाव दिखाते हैं। उनका प्रकाश तो बाहर आए बगैर रहेगा ही नहीं न!

व्यवस्थित अर्थात् 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स।' उसे लोग 'नेचर' (कुदरत) कहते हैं। जो भी संयोग इकट्ठे होते हैं, वे सब अपने-अपने स्वाभाविक भाव दिखाकर, इकट्ठे होकर वापस नए प्रकार का भाव दिखाते हैं। H_2 और O के मिलने से पानी बनता है। उसी तरह से यह मिलता और बिखरता जाता है। खाना-पीना, फिर संडास जाना, यह सब 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है!

आप्तसूत्र- 97

कुदरत कोई चीज़ नहीं है। कुदरत अर्थात् संयोगों का इकट्ठा होना। संयोगों के इकट्ठे होने का प्रयत्न होने लगे, उसी को कहते हैं कुदरत और जब संयोग इकट्ठे हो जाते हैं तो उसे कहते हैं 'व्यवस्थित'।

प्रश्नकर्ता : 'कुदरती शक्ति और व्यवस्थित शक्ति' ये दोनों एक ही हैं या अलग-अलग हैं?

दादाश्री : कुदरती शक्ति तो आप अपनी भाषा में समझते हो न? कुदरती शक्ति को मैं क्या कहता हूँ? साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। यह आपको गुजराती में समझ में नहीं आएगा, इसलिए मैंने आपको 'व्यवस्थित' शक्ति दी है। बहुत सूक्ष्म बात है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित और कुदरत में कोई फर्क है क्या?

दादाश्री : कुदरत को यदि इस तरह कुदरत कहूँ न तो लोगों को समझ में नहीं आएगा। वास्तव में कुदरत क्या है? साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। कुदरत का यदि इंग्लिश करने जाए तो लोग उसे नेचर कहेंगे। वास्तव में वह नेचर नहीं है। वह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। जिस प्रकार H_2 के O मिलने से बरसात होती है और लोग कहते हैं कि कुदरत बरसा रही है। लेकिन यदि कुदरत कहेंगे तो लोग उसका दुरुपयोग करेंगे और वह नेचर हो जाएगा। लोग समझते नहीं हैं। इसलिए मैंने अलग कर दिया है।

इन सारे संयोगों से सब बदल जाता है। इन साइन्टिफिक संयोगों से सब बदलाव होते रहते हैं। जब बदलाव होता है, उस समय वह कुदरती शक्ति कहलाती है। सूर्यनारायण की उपस्थित और मौसम की गर्मी और नीचे समुद्र तो उससे भाप बनकर ऊपर जाती ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : वह सब कुदरत है?

दादाश्री : कुदरती। ये सारे संयोग उत्पन्न होते हैं। कोई कुछ भी नहीं करता है। गर्मी के ताप की उपस्थिति से ही भाप उत्पन्न होती है। उससे फिर ऊपर बादल बनते हैं। वे संयोगों से बनते हैं और जब समय होता है तब संयोगों से यहाँ पर आते हैं। उन्हें हवा खींचकर ले आती है। पंद्रह जून को, जब पश्चिम की तरफ की ज़बरदस्त हवा बहती है तब वह बादलों को खींचती रहती है। खींचकर बादलों को यहाँ पर ले आती है। तब इनके जैसे लोग जिनके पास दो सौ-तीन सौ बीघा जमीन है, वे कहते हैं, 'अब बरसात आएगी' लेकिन काले बादल छाने के बाद भी एक घंटे में कहीं के कहीं बिखर जाते हैं! अगले दिन जब बादल जैसी कोई चीज़ ही नहीं दिखाई देती, तब इनके जैसे लोग क्या कहते हैं? 'आज तो अब बरसात आएगी ही नहीं, चलो शर्त लगाते हैं।' शर्त लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतने में तो घंटे भर में ही न जाने कहाँ से मूसलाधार आ जाती है। यह सब कुदरत है।

आप्तसूत्र- 2696, 98

'व्यवस्थित' का गठन कब होता है? किसी ने आपको उकसाए और आप तन्मयाकार हो जाते हो, यों जो अवस्थित हुए, वही 'व्यवस्थित' का गठन है! 'अवस्थित' अर्थात् 'बेटरी', 'चार्ज' किया हुआ। 'व्यवस्थित' अर्थात् जो 'डिस्चार्ज' होता है।

इस व्यवस्थित के बारे में आपको ज़रा अंदाज़ देते हैं कि व्यवस्थित क्या है?

अब यदि, आज इस व्यवस्थित की जड़ ढूँढनी हो तो वह किस प्रकार से मिलेगी? तो कहते हैं कि यदि किसी व्यक्ति ने 'ज्ञान' नहीं लिया हो और वह अभी आए और कोई व्यक्ति उसके साथ उल्टा व्यवहार करे, उस समय द्रव्य से क्रिया तो होगी ही, उल्टी ही होगी। लेकिन खुद उसमें एकाकार हो जाता है। क्योंकि द्रव्य

क्रिया मन में है, चित्त में है, बुद्धि में है, अहंकार में है लेकिन खुद उसमें एकाकार हो जाता है।

मन जो सोचता है, खुद उसमें एकाकार हो जाता है, यानी कि उसमें तन्मयाकार हो जाता है ऐसी अपनी लोक भाषा है कि मन सोचता है। वास्तव में मन सोचता नहीं है, मन में निरंतर स्पदंन होते रहते हैं। जैसे-जैसे वह फूटता जाता है वैसे-वैसे स्पंदन होते हैं। जिस प्रकार यह अनारदाना (आतिशबाज़ी) फूटता है न, उसी तरह सब अंदर से निकलता रहता है। उसे बुद्धि पढ़ सकती है कि, 'इसका भावार्थ यह है।' इसलिए फिर अंदर अच्छा लगता है, वहाँ पर अहंकार उसमें तन्मयाकार होकर विचरता है और जब वह विचरता है तो उसे विचार कहा जाता है, वर्ना वह विचार नहीं बनता। अब, जब अहंकार उसमें विचरे और तन्मयाकार हो जाए, मन की अवस्था में खुद तन्मयाकार हो जाए तो उसे अवस्थित कहा जाएगा।

अर्थात् इंसान में जब कोई विचार दशा या वाणी दशा की, अवस्था उत्पन्न होती है तो वह अवस्था बदलती रहती है। उस अवस्था में तन्मयाकार होना, अज्ञान दशा में खुद तन्मयाकार ही हो जाता है। 'मैं ही हूँ' ऐसा मानता है इसलिए तन्मयाकार ही रहता है। जब अवस्था में तन्मयाकार होता है, उस समय चार्ज होता है। जब चार्ज होता है तब गुजराती में उसे 'अवस्थित' कहा जाता है। अवस्था में एकाकार हुआ तो वह अवस्थित हुआ। वह कम्प्यूटर में जाकर 'व्यवस्थित' बनकर बाहर आता है। जो अवस्थित है न, वही व्यवस्थित बनकर बाहर आता है। लेकिन वह व्यवस्थित, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' इकट्ठे कर देता है। अवस्थित एविडेन्स इकट्ठे नहीं करता। उसके चार्ज होने पर ऐसा तय हो जाता है कि इस अनुसार इतने एविडेन्स (संयोगों) की ज़रूरत पड़ेगी। व्यवस्थित अर्थात् जो एविडेन्स इकट्ठे कर देता है। अवस्थित में से व्यवस्थित बना है। अत: इसमें प्रारब्ध या पुरुषार्थ ऐसी-वैसी गप्प वाली बात नहीं है। एक्ज़ेक्ट, पोइन्ट टू पोइन्ट है यह चीज़। लेकिन सभी को समझ में नहीं आ सकती न! अत: सभी को 'व्यवस्थित' करके दे दिया है। ऐसा बता दिया कि 'व्यवस्थित ही इसका कर्ता है।' वास्तव में, व्यवस्थित ही कर्ता है और उसका स्वरूप साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। लेकिन यह अंदाज़ा दे दिया कि यह किस प्रकार से व्यवस्थित है।

आप्तसूत्र- 2698

'व्यवस्थित' कैसा है? वह 'समष्टि' शक्ति है और 'ये' (जीव) 'व्यष्टि' रूपी हैं। व्यष्टि के, सभी भ्रांति के भाव समष्टि में जाते हैं और 'कम्प्यूटन' द्वारा समष्टि का फल मिलता है।

व्यवस्थित अर्थात् जिसके जैसे भाव होते हैं, वे सभी कम्प्यूटर में फीड होते हैं और फीड में से व्यवस्थित बनकर आते हैं। यानी कि रूपक में आता है।

प्रश्नकर्ता : वह कुछ ठीक से समझ में नहीं आ रहा है। उसे थोड़ा विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : अब यह कैसा है? यह व्यवस्थित शक्ति है न, वह कम्प्यूटर जैसी है, लेकिन कम्प्यूटर नहीं है। यह तो बहुत बड़ा है। लेकिन जिस प्रकार कम्प्यूटर फल देता है, वैसा ही फल यह देता है। और सब काम करवा लेगा। सारा ही एडजस्टमेन्ट करवा लेगा।

जैसे कम्प्यूटर होता है न, उसमें इस तरफ फीड होता है और दूसरी तरफ उसका रिज़ल्ट आ जाता है। यह जगत् रिज़ल्ट रूपी हैं। फीड पहले के कॉज़ेज़ हैं। कॉज़ेज़ फीड के रूप में होते हैं और रिज़ल्ट इफेक्ट के रूप में। तो यह जो रिज़ल्ट है, इसे कोई बदल नहीं सकता। कॉज़ेज़ को बदला जा सकता है। अत: व्यवस्थित क्यों कहा है? क्योंकि इसमें कोई भी बदलाव नहीं किया जा सकता। यानी कि यह पक्का हिसाब ही है, व्यवस्थित ही है, यह चेन्ज नहीं हो सकता। व्यवस्थित होने से पहले हमें तय करना चाहिए।

इस जगत् को चेतन नहीं चलाता और न ही हम चलाते हैं। अपना यह जो कम्प्यूटर है, वह व्यष्टि कम्प्यूटर है और दूसरा समष्टि कम्प्यूटर है। यह सब उस कम्प्यूटर की तरह ही चलता है। लेकिन यदि इसे कम्प्यूटर कहेंगे तो ये सारे कम्प्यूटर बनाने वाले लोग हैं न, वे मन में खुश होंगे कि ओहोहो! हमारे जैसा... इसके जैसा उदाहरण दिया है। इस पर से आपने लिया है, आपसे उसने नहीं लिया। इन लोगों ने नकल की है, उसकी नकल पर से असल नहीं बनाया। यह तो अद्‌भुत है, जो मैंने देखा है! इस अवस्थित को कम्प्यूटर में डालना, फिर वह व्यवस्थित होकर कम्प्यूटर से बाहर निकलता है और व्यवस्थित अर्थात् साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। सारे संयोगों के इकट्ठे होने पर आपका काम हो जाता है।

आप्तसूत्र- 3924

इतना गूढ़ 'साइन्स' है कि आप यदि एक भी खराब विचार करते हो तो तुरंत ही बाहर के परमाणु खिंचकर अंदर आ जाते हैं और उनसे जैसा हिसाब बनता है, वैसा ही फल देकर जाते हैं। बाहर से किसी को फल देने नहीं आना पड़ता। बाहर फल देने वाला कोई ईश्वर है ही नहीं!

इतना गूढ़ साइन्स है कि आपके खराब विचार करते ही तुरंत ही बाहर के परमाणु हैं न, वे फिर जॉइन्ट (इकट्ठे) होकर अंदर दाखिल हो जाते हैं और उससे हिसाब बनता है और फिर वे वैसा ही फल देकर जाते हैं। यों ही नहीं चले जाते। किसी को भी फल देने नहीं आना पड़ता। बाहर कोई फल देने वाला है ही नहीं। ऐसा कोई ईश्वर है ही नहीं, कि जो आपको फल देने आए!

हम द्वेष से जो खींचते हैं न यों, जो खराब बोलते हैं या खराब भाव करते हैं तो ऐसे खराब परमाणु अंदर आते हैं कि जो कड़वे फल देते हैं, नापसंद। अच्छा भाव करने पर अच्छा फल देते हैं, मीठे फल देते हैं और यदि भाव या अभाव नहीं करें, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो कर्ता भाव बंद हो जाता है तब वे पुराने (कर्म) फल देकर चले जाते हैं, दूसरे नए नहीं आते। इस प्रकार से यह साइन्स है, पूरी पद्धति है। यह कोई धर्म जैसी चीज़ नहीं है। धर्म तो, जब तक साइन्स में नहीं आ जाता तब तक योग्यता लाने के लिए है। उसमें कुछ योग्यता आए, अधिकारी बने इसीलिए धर्म है। बाकी, साइन्स तो यह पूरा साइन्स ही है सब।

परमाणु ही सबकुछ कर रहे हैं। जैसे कि यदि एक व्यक्ति इतनी अफीम या ऐसा कुछ घोलकर पी जाए तो फिर क्या भगवान को मारने के लिए आना पड़ेगा? कौन मारेगा? उसी तरह यह सब भी अफीम जैसा ही है। अंदर अलग ही प्रकार के परमाणु बन जाते हैं। अमृत जैसे, अफीम जैसे, तरह-तरह के परमाणु, जैसे भाव

होते हैं वैसे परमाणु बन जाते हैं। आत्मा की इतनी अलौकिक शक्ति है! जड़ की भी इतनी अलौकिक शक्ति है कि उतना धारण कर सकता है। जड़ की शक्ति मैंने देखी है, इसलिए मैं बता देता हूँ कि यह बहुत बड़ा साइन्स है। आत्मा की शक्ति तो है ही, उसे तो पूरी दुनिया एक्सेप्ट (स्वीकार) करती है लेकिन जड़ की भी ज़बरदस्त शक्ति है। आत्मा से भी बढ़कर है। इसीलिए तो सारा संसार फँसा हुआ है न, वर्ना आत्मा अंदर फँसने के बाद में जब चाहे तब मुक्त क्यों नहीं हो सकता? तो कहते हैं, 'नहीं' जब तक इस विज्ञान को नहीं जानेंगे तब तक नहीं छूट सकते। जब तक खुद असल विज्ञान में नहीं आ जाते तब तक नहीं छूट सकते।

यों भाव करते ही सारे परमाणु चेन्ज हो जाते हैं। अत: यह पूरा साइन्स है। धर्म तो कुछ हद तक ही है। मनुष्य में योग्यता लाता है, एक तरह के फॉर्मेशन (गठन) में आ जाता है। फॉर्मेशन में आने के बाद उसे यह प्राप्ति हो जाती है। कुछ नॉर्मेलिटी में आ जाने के बाद में यह साइन्स मिले तभी काम हो सकता है, वर्ना नहीं हो सकता।

आप्तसूत्र- 2449

जो स्थूल है, वह 'व्यवस्थित' के अधीन है व 'एक्ज़ेक्ट' है और सूक्ष्म को वह खुद गढ़ता है।

अब फिर जो व्यवस्थित है, वह नियम पूर्वक है। व्यवस्थित गप्प नहीं है। नियम पूर्वक का मतलब क्या है? कि पिछले जन्म में हमने जो योजनाएँ बनाई (गढ़ी) होती हैं, ऑन पेपर या ऑन फिल्म तो उन योजनाओं के परिपक्व होने में लगभग पच्चीस-तीस साल, किसी-किसी के चालीस साल या सौ साल में सारी योजना में परिपक्व हो जाती हैं। तब तक वे एकदम से रूपक में नहीं आतीं। अत: योजनाओं के परिपक्व होने पर इस जन्म में उसके फल चखने को मिलते हैं।

सिर्फ योजना ही बन जाती है। मनुष्य से अन्य कुछ भी नहीं हो सकता। योजना अर्थात् ऑन पेपर। सिर्फ उतना ही हो सकता है, बाकी सब अपने आप ही होता रहता है।

जिस प्रकार से यह योजना बनी तो उससे बना हुआ कहा जाएगा। वहाँ पर कर्ता पद नहीं होता। यहाँ पर फिर वह कर्ता मानता है। क्योंकि योजना बन चुकी है इसलिए अपने आप ही होता रहेगा। यानी कि सिर्फ योजना ही बन जाती है। यदि वह अकेला योजना बना पाता तो खुद की मन चाही बनाता। लेकिन उसके पीछे फिर वैसा ही निमित्त है। इसलिए फिर सभी नैमित्तिक संयोगों से सारी योजनाएँ बनती है। लेकिन इसमें मन चाहा कुछ भी नहीं हो सकता। कार्य के समय खुद निमित्त नहीं है! जब पुरुषार्थ होता है, उस समय खुद निमित्त है।

प्रश्नकर्ता : क्या योजना के समय खुद निमित्त है?

दादाश्री : योजना के समय निमित्त है, कार्य के समय निमित्त नहीं है। कार्य कुदरती रूप से होते रहते हैं और उसे खुद ऐसा मानता है कि 'मैंने किया' ऐसा गर्व करने से गर्वरस का आनंद आता है तो फिर उन साहब को उनका अगला जन्म मिलता है।

कर्ता बनने का मतलब क्या है? योजना

को आधार देना। अकर्ता होना क्या है? योजना को निराधार कर देना।

योजना बनाते समय सब बदला जा सकता है लेकिन जब योजना रूपक में आने लगे, तब बदलाव नहीं हो सकता। क्योंकि यह जगत् खुद सूक्ष्म में से स्थूल बना है। यानी कि 'सेकन्ड स्टेज' में आया है, 'फर्स्ट स्टेज' में नहीं है। 'फर्स्ट स्टेज' में बदला जा सकता है। जो स्थूल है वह 'व्यवस्थित' के ताबे में हैं और एक्ज़ेक्ट है और जो सूक्ष्म है, उसे वह गढ़ता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ऐसा भी हो सकता है न, कि डॉक्टरी से परेशान हो जाए तो फिर योजना बनाता है कि वकालत में सुख है। तब ऐसा हो सकता है। यह डॉक्टरी छूट जाए और वकालत ग्रहण करे।

दादाश्री : जितना-जितना उसने जैसा-जैसा चित्रित किया है, उस चित्रण के अनुसार योजनाबद्ध आयोजन किया है। कोई भी मालिक नहीं है। मरना-वरना सभी का सारा आयोजन, उसके खुद के तय किए अनुसार ही बाद में मृत्यु आती है। 'अस्पताल मुझे स्वप्न में भी नहीं चाहिए, कहता है तो उसे स्वप्न भी नहीं आता, घर पर दवाईयाँ खाता रहता है। यह सारा आपका ही खेल है। 'ऐसी फ्रेन्च कट दाढ़ी चाहिए।' ऐसा तय किया होता है, फिर वह उतनी ही दाढ़ी रखता है, यह डिज़ाईन है। और हज्जाम ऐसा ही कर देता है। यदि अब सभी वकीलों को बैठाकर पूछें कि 'यह हड़ताल कैसे करते हैं? बताइए।' वह तो डिज़ाईन है, उसमें आपने क्या किया? 'हमने हड़ताल की', कहते हैं, मूल वस्तु को समझते नहीं है न, इसलिए फिर अंहकार करते हैं और गर्वरस चखते हैं। बाद में फिर जब पुलिस वाले पकड़ने आते हैं तब ऐसे-ऐसे विनती करते रहते हैं, छूटने के लिए। अरे भाई, जानता नहीं था क्या। राज़ी खुशी से जाना चाहिए आपको। यों ही कहना चाहिए कि 'आप नहीं पकड़ेंगे तो चलेगा, मैं आपके साथ चलता हूँ।' जबकि यों ही पकड़कर ले जाने लगे, तब टेढ़ा-मेढ़ा होता है!

भगवान ने मना किया है कि, 'कोई भी योजना मत बनाना।' वह तो पहले से ही बनाई जा चुकी है। अब फिर से नई योजना बना रहे हो। यानी कि पहले वाली और ये दोनों अलग-अलग हो जाएँगी। वह योजना तो बन चुकी है। अब तो आपको सिर्फ कार्य ही करना है। योजना बनने के बाद में ही तो आपका यहाँ संसार में जन्म हुआ। अब फिर से क्यों योजना बना रहे हो? रात को ओढ़कर वापस योजनाएँ बनाते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : उसका अर्थ यह है कि सभी कुछ व्यवस्थित रूप से सेट ही है। इंसान की कोई स्वतंत्र शक्ति है ही नहीं?

दादाश्री : 'इसी तरह से सेट हो चुका है' यह ज्ञान हो जाएगा पूरा जीवन अवस्थित हो जाएगा! नाटक में भर्तृहरि का नाटक नहीं बनाते? एक दिन पहले उसकी रिहर्सल (अभ्यास) करवाते हैं और फिर नाटक करते हैं। नाटक करने से पहले यदि वे कहें कि यह तो सेट ही है तो वह अभिनय करना चूक जाएगा और फिर उसका दंड भुगतना पड़ेगा। अत: यह वैसा सेट नहीं है। कार्य करते जाओ और जो फल आता है वह 'व्यवस्थित' है! व्यवस्थित का ज्ञान बोलना नहीं पड़ता। अपनी 'जेब कट जाए' तो तुरंत ही 'व्यवस्थित' समझ लेना चाहिए।

आप्तसूत्र- 2699

'व्यवस्थित' का अर्थ समझना चाहिए। प्रयत्न करना है, फिर जो हो सो, जो परिणाम आए, वही 'व्यवस्थित' है।

यह एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित है, मैंने देखा है। आपसे प्रयत्न भी वैसे ही होंगे। लेकिन यह चेतावनी हमें क्यों देनी पड़ती है? कितने ही लोग प्रयत्न कम कर देते हैं। भावना कम कर देते हैं कि 'व्यवस्थित' है न, अब क्या हर्ज है? इसलिए फिर काम पर भी नहीं जाते। इस तरह व्यवस्थित नहीं कह सकते। जब ज़रूरत पड़े तभी 'व्यवस्थित' कह सकते हैं। वर्ना 'व्यवस्थित' तो कह ही नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : होने के बाद में 'व्यवस्थित।'

दादाश्री : हाँ, होने के बाद में व्यवस्थित। ताकि फिर हमें संकल्प-विकल्प न हो कि ऐसा क्यों होता है? 'व्यवस्थित है' कहने से फिर संकल्प-विकल्प बंद हो जाते हैं, वह छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह जो ज़रूरत से ज़्यादा श्रद्धा है कि यह व्यवस्थित करवा रहा है, वह हमारा पुरुषार्थ कम कर देती है तो वहाँ पर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं कह सकते कि व्यवस्थित करवा रहा है। यह सारी खुद की ही ज़िम्मेदारी है। करवाने वाला कोई और है, फिर भी ज़िम्मेदारी खुद की है। और यदि पहले से ही 'व्यवस्थित' कह देंगे न तो आगे की प्रक्रिया बंद हो जाएगी। प्रक्रिया शुरू हुई और परिणाम में वहाँ नुकसान हुआ दस लाख रूपए का, तब कहना कि, 'व्यवस्थित है।' बाकी नुकसान होने तक तो ठेठ तक पकड़े रखना है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित पहले बोलना चाहिए या बाद में?

दादाश्री : वास्तव में तो पहले से ही है लेकिन पहले से बोलने से दुरुपयोग हो जाएगा। क्योंकि अभी ज्ञान प्रगट नहीं हुआ है। वैसी जागृति उत्पन्न नहीं हुई है इसलिए भूल हो सकती है। हमें लगता है कि यह ऐसा ही है। लेकिन अगर आप ऐसा कहोगे तो परेशानी हो जाएगी। आपको व्यवस्थित इसलिए देते हैं ताकि आपको संकल्प-विकल्प न हों। वर्ना क्या तीर्थंकर यह ज्ञान नहीं बताते? क्या वे यह ज्ञान नहीं जानते थे? जानते थे लेकिन बताया नहीं। जब पुलिस वाला पकड़ने आए तब यदि 'व्यवस्थित' कहोगे तो आपको संकल्प-विकल्प नहीं होंगे। बाकी व्यवस्थित तो पहले से ही है। आपको जागृति न रहे इसलिए पहले से ही व्यवस्थित नहीं कह सकते। फिसलने की जगह पर बताना पड़ेगा कि 'फिसल सकते हैं, इसलिए ज़रा सावधान रहना।'

अपनी पाँच आज्ञाएँ त्रिकाली सत्य है। लेकिन उन्हें इस संदर्भ में समझना है, हर किसी को अपनी क्षमता के अनुसार समझना है।

प्रश्नकर्ता : सबकुछ व्यवस्थित ही सेट है न?

दादाश्री : जब भूख लगती है तब क्यों 'व्यवस्थित' नहीं कहता? जब कुएँ के ऊपर बैठा हो तो ऐसे देखकर क्यों चलता है? इसलिए शुरू में व्यवस्थित नहीं बोल सकते। उसके अंदर गिर जाओ तब कहना कि 'व्यवस्थित है।'

प्रश्नकर्ता : अत: इसका अर्थ ऐसा हुआ कि पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए?

दादाश्री : नहीं, पुरुषार्थ नहीं, प्रयत्न कहते

हैं, व्यवहारिक प्रयत्न। वह जागृति रखनी चाहिए, अन्य कुछ भी नहीं और भूल हो जाने के बाद में फिर व्यवस्थित और था ही व्यवस्थित, ऐसा जो था न, उसी का खुलासा हुआ है।

ऐसा है कि जो जागृत है, उसे कुछ भी करने की शर्त (ज़रूरत) नहीं है। यह तो अजागृति वालों के लिए मैंने बताया है कि तू प्रयत्न करना, नहीं तो उल्टा काम करेगा। व्यवस्थित का उल्टा उपयोग करेगा।

व्यवस्थित सिर्फ ज्ञानी पुरुष ही उसे व्यवस्थित मान सकते हैं हर प्रकार से। जब तक पूरी तरह ज्ञान नहीं हुआ है तब तक आपको प्रयत्न करते ही रहने हैं। बाकी, करता है सारा व्यवस्थित ही। ज्ञानी तो हर प्रकार से व्यवस्थित मानते हैं। ज्ञानी को ज्ञान में दिखाई देता है कि यह सब किस तरह चल रहा है।

व्यवहार में ऐसा मानने वाले कि, 'हो जाता है' और ऐसा मानने वाले कि, 'करना ही पड़ता है', दोनों ही कच्चे हैं। अपना यह दो आँखों वाला ज्ञान है। पूरी दुनिया का ज्ञान एक आँख वाला है, एकांतिक ज्ञान है। 'यह करना पड़ता है' व्यवहार में ऐसा बोलना है और *लक्ष* में यह रखना है कि 'हो जाता है' और 'करना पड़ेगा', वह भाव है और 'हो जाता है', वह व्यवस्थित है।

'निश्चित है' ऐसा एक तरफा नहीं बोल सकते। 'अनिश्चित' है ऐसा भी नहीं बोल सकते। जोखिमदारी है, गुनाह लगेगा। निश्चित-अनिश्चित के बीच में हैं यह। हर प्रकार से सावधानी रखने के बावजूद भी यदि जेब कट जाए और समझे कि 'व्यवस्थित है', वह यथार्थ है। व्यवस्थित का अर्थ समझना है। प्रयत्न करना, फिर जो हो सो, परिणाम जो भी हो वह 'व्यवस्थित।'

प्रश्नकर्ता : तो ठेठ तक कार्य करना है। परिणाम में ही व्यवस्थित रखना है।

दादाश्री : हाँ, परिणाम में ही व्यवस्थित रखना है, ठेठ तक पकड़े रखना है। आपको बस ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'यह सब व्यवस्थित चलता रहता है', ऐसा नहीं बोलना चाहिए। चंदूभाई के मन-वचन-काया जो भी कार्य कर रहे हों न, तो उन्हें करने देना कि 'आप अपना करो।' वास्तव में खुद कर्ता नहीं है।

आप्तसूत्र- 2701

'व्यवस्थित' को लक्ष (जागृति) में रखना है। उसका गलत अवलंबन नहीं लेना चाहिए। सभी प्रयत्न होने के बाद कार्य होता है यदि काम बिगड़ जाए तो कहना कि 'व्यवस्थित' है।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' तो बहुत कमज़ोर शब्द है। क्योंकि कई जगह पर इसका बहुत दुरुपयोग होता है।

दादाश्री : हाँ, यदि उसका दुरुपयोग हो तो वह कमज़ोर शब्द कहा जाएगा और सदुपयोग हो तो व्यवस्थित जैसी कोई चीज़ नहीं है! और फिर व्यवस्थित का मूल अर्थ तो अलग ही है।

अपना कोई नज़दीकी रिश्तेदार बीमार हो और फिर यदि कोई ब्राह्मण कहे कि, 'इनके ग्रह अच्छे नहीं हैं। लगता नहीं है कि ये टिकेंगे।' यदि हम ऐसी बात सुन ली और फिर वापस दादा का व्यवस्थित याद आ जाए कि 'व्यवस्थित में जो होगा, वह होगा।' तब फिर इलाज बंद हो जाएँगे। अपने हाथ कमज़ोर पड़ जाएँगे। व्यवस्थित का ऐसा दुरुपयोग करेंगे तो हमारा इलाज करवाने का

जो उल्लास था, वह खत्म हो जाएगा। रात को बैठना भी बंद हो जाएगा। वह भयंकर गुनाह कहा जाएगा। हमें तो यही मानकर अंत तक दवा-दारू और सारे उपचार करने हैं कि ये जीएँगे। अंदर यदि भय लगता रहे तब कहना, 'व्यवस्थित में जो होगा, वह होगा।' लेकिन डरने की ज़रूरत नहीं है। व्यवस्थित कब कहा जाएगा? जब उनकी (मृत्यु) हो जाए तब फिर हमें कहना है कि, 'व्यवस्थित' है। मृत्यु होते ही कह देना, व्यवस्थित। 'यह किसने किया?' तब कहते हैं कि 'व्यवस्थित ने।'

कोई भी चीज़ भूतकाल हो जाए तब व्यवस्थित ही कहना है। लेकिन 'जो होना है' उसके लिए पहले ही व्यवस्थित नहीं कहना है। होने के बाद कहो और यदि भय लगे तो तय करना कि है व्यवस्थित, लेकिन मुझे तो बिल्कुल सतर्कता से रहना चाहिए। मुझे डरने का कोई कारण नहीं है। मुझे तो सतर्कता पूर्वक ही चलना है। इतना ही समझने की ज़रूरत है। क्योंकि यह तरीका वैज्ञानिक है। यह गप्प की तरह से नहीं चलेगा, बात वैज्ञानिक होनी चाहिए। ऐसी होनी चाहिए कि कभी भी न टूटे, भाई की मृत्यु हो जाए तो वह जैसा होना था वैसा हो गया। अब इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। डॉक्टर के हाथों मर गया हो तो डॉक्टर का दोष नहीं है। लोग तो गलत आरोप लगाते हैं, दावा करते हैं। वह भी कोई तरीका है? वे सब तो निमित्त हैं!

आप्तसूत्र- 2938

यदि किसी भी ज्ञान का सदुपयोग होता है तो वह ज्ञान ही विज्ञान बन जाता है और दुरुपयोग होने पर ज्ञान, अज्ञान बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : हमें 'व्यवस्थित' का अवलंबन कब लेना है?

दादाश्री : जेब कट जाने के बाद में, क्योंकि 'व्यवस्थित' का सीधा अवलंबन कौन ले सकता है? जो संपूर्ण ज्ञान में हो वही ले सकता है। अन्य लोग तो इसमें गड़बड़ कर देंगे, 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग कर देंगे। इसलिए काम होने के बाद में 'कम्प्लीट' 'व्यवस्थित' कहना है और जब भविष्य का विचार आए तब 'व्यवस्थित' कह देना है।

प्रश्नकर्ता : कितनी ही बार बातचीत में 'व्यवस्थित है, व्यवस्थित है', कह देते हैं जबकि काम की शुरुआत भी नहीं की होती है।

दादाश्री : नहीं बोलना चाहिए ऐसा, यह तो जोखिम है। ज्ञानी पुरुष तो जो चाहे सो कर सकते हैं। बाकी और लोगों को तो अभी तक संपूर्ण शुद्ध उपयोग नहीं है, इसलिए जोखिम है इसमें। 'व्यवस्थित' कहकर, आँखें मींचकर तो चलते नहीं हो न? रास्ते में आँखें मींचकर चलते हो क्या? क्यों 'व्यवस्थित' कहकर नहीं चलता? वहाँ पर तो आँख खोलकर चलता है। और 'व्यवस्थित' कहकर ऐसा क्यों नहीं कहता कि, ''अब बैठे रहो न, अब खाना मिलेगा तो ठीक है, नहीं तो कोई बात नहीं है, 'व्यवस्थित' है!'' ऐसा नहीं बोलता न? 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग करना गुनाह है।

आप्तसूत्र- 2456

भूतकाल का भय छूट गया, भविष्य 'व्यवस्थित' के हाथ में है। अतः वर्तमान में रहो।

मुख्य चीज़ तो व्यवस्थित है यानी क्या है

कि अव्यवस्थित चला गया और अब यह सब व्यवस्थित है। हमारी लाइफ में अब व्यवस्थित है सब। व्यवस्थित अर्थात् भविष्य की चिंता नहीं करनी है, भूतकाल को भूलकर निरंतर वर्तमान में ही रहना ही व्यवस्थित है।

आगे जाकर भूख लगेगी या नहीं, मर जाएँगे या जीवित रहेंगे, बीमार पड़ जाएँगे या नहीं, आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। व्यवस्थित ही है, उसमें आप कोई बदलाव नहीं ला सकते। इसलिए आप ज्ञान में रहो। पहले जब तक यह ज्ञान नहीं था तब तक इसमें कुछ बदलाव ला सकते थे। लेकिन अब शुद्धात्मा हो गए हो इसलिए बदलाव नहीं कर सकते।

अब, यह व्यवस्थित सभी लोगों के लिए नहीं है, जिन्हें अपना ज्ञान दिया हुआ है, 'अक्रम विज्ञान' दिया है, उनके लिए व्यवस्थित है। क्रमिक मार्ग में भी व्यवस्थित नहीं है। अत: आपको तो व्यवस्थित इतना ही समझ लेना है कि अब कोई परेशानी नहीं रही। अब आप वर्तमान में काम करते रहो और वर्तमान में पाँच आज्ञा का पालन करते रहो, बस।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में किस तरह से रह सकते हैं?

दादाश्री : यदि भूतकाल को भूल जाएँगे तो! भूतकाल तो गॉन (गया), आज उसे याद करने से क्या होगा? वर्तमान का फायदा, इस फायदे को खो देंगे। और वह नुकसान तो है ही। कहाँ पर रहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : हाँ, भविष्यकाल तो व्यवस्थित के ताबे में सौंप दिया, भूतकाल तो खो गया। तो जो-जो भूतकाल की फाइलें मन में उठती हैं, उनका अभी *निकाल* (निपटारा) नहीं करना है? तो कहते हैं, 'नहीं, उन्हें कहना, रात को दस-ग्यारह बजे आओ।' एक घंटे का टाइम रखा है, उस समय आओ तो उसका *निकाल* कर देंगे अभी नहीं।' अभी तो यदि पैसों का नुकसान भी हो जाए तो वर्तमान को नहीं खोएँगे। तो कहाँ रहना है?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : ये दादा किस में रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : हाँ, 'एक घड़ी पहले हमें ऐसा कह गए थे', यदि मैं उसे याद करूँ तो अभी जो वर्तमान है, उसे भी खो दूँगा। जो हो चुका है, उसका वहीं पर *निकाल* कर देना है।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में एक्ज़ेक्ट कैसे रहना है ज़रा उदाहरण देकर समझाइए?

दादाश्री : अभी आप किसमें हो? कुसंग में हो या सत्संग में हो? होटल में हो या शेयर बाज़ार में हो, वह नहीं पता चल रहा आपको? कौन से बाज़ार में हो?

प्रश्नकर्ता : सत्संग में हूँ।

दादाश्री : सत्संग में हो। यानी कि अभी वर्तमान में रह रहे हो आप। अब चार दिन पहले छ: सौ रुपए खो गए हों और वे याद आएँ तो वह भूतकाल हो गया। उसे याद करोगे यहाँ पर, वर्तमान में तो भूतकाल को यहाँ खींच लाए। यदि यहाँ पर आने में परेशानी हुई हो और उसके बारे में सोचें कि, 'अरे, परेशानी होगी, अब तो ऐसा

करना है और वैसा करना है,' वर्तमान में यहाँ पर बैठे-बैठे भविष्य के बारे में सोचें तो वह भविष्य काल ही कहा जाएगा। वर्तमान में रहने को कहते हैं। क्या गलत कहते हैं? समझ में आ गया पूरी तरह से?

प्रश्नकर्ता : अब समझ में आ गया।

दादाश्री : ऑफिस में साहब ने अगर चार बजे कुछ काम सौंपा हो कि ज़रा इसका एकस्ट्रेक्ट (अर्क) निकाल दो न। तब अगर बीच में मन ऐसा बोले 'रात को होटल में कितना मज़ा आया था,' तो उसका चित्रपट भी अंदर दिखाई देता है। यदि ऐसा एविडेन्स आए तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : काम बिगड़ जाएगा।

दादाश्री : हाँ, फिर उस बात का एकस्ट्रेक्ट नहीं निकलेगा। और वे साहब फिर शिकायत करेंगे। देखो, उलझ गया न, भविष्य की चिंता में, भूतकाल में खो गया न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, खो गया है।

दादाश्री : तो यह ऐसा है। हमने जो ज्ञान दिया है न, कि वर्तमान में रहो, भूतकाल में नहीं। भूतकाल कोई हेल्प (मदद) नहीं कर सकता, नुकसान ही करेगा। इसलिए आप वर्तमान में रहो।

यहाँ से स्टेशन गए और गाड़ी से जाना था, बहुत जल्दी थी, आज की तारीख का केस था, फिर भी यदि गाड़ी हाथ में न आए और गाड़ी चूक गए तो चूक गए। वह हो गया भूतकाल और 'कोर्ट में क्या होगा' वह भविष्यकाल है, वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है। अतः आप वर्तमान में रहो! हमें तो ऐसा पृथक्करण तुरंत ही हो जाता है। आपको ज़रा देर लगेगी। हमें 'ऑन द मोमेन्ट' (तुरंत ही) सारा ज्ञान वहाँ पर हाज़िर हो जाता है। हम निरंतर वर्तमान में रहते हैं।

आप्तसूत्र- 2956

यदि 'खुद' अकर्ता हो जाए तो समझ में आएगा कि 'व्यवस्थित' कर्ता है, तभी जगत् 'जैसा है वैसा' समझ में आएगा। जब तक 'व्यवस्थित' समझ में नहीं आएगा, तब तक संकल्प और विकल्प नहीं जाएँगे, भय नहीं जाएगा, क्रोध-मान-माया और लोभ नहीं जाएँगे।

जगत् तो बिल्कुल 'व्यवस्थित' है। यह भगवान ने क्यों नहीं बताया? दुर्जन लोग दुरुपयोग करेंगे, जगत् उल्टे रास्ते चलेगा इसलिए सही बात नहीं बताई। 'व्यवस्थित' के ज्ञान से आपको संकल्प-विकल्प नहीं होंगे। इस जगत् में यदि कर्तापन मिट जाए तो 'व्यवस्थित' समझ में आ सकेगा। जब तक कर्तापन नहीं मिटता तब तक 'व्यवस्थित' समझ में नहीं आ सकता। खुद अकर्ता हो जाए तो समझ में आएगा कि इसका कर्ता कौन है। खुद कर्ता नहीं है, फिर भी कर्ता मानता है, तब फिर यह समझ में कैसे आ सकता है?

प्रश्नकर्ता : खुद का कतृत्व नहीं छोड़ता।

दादाश्री : हाँ। इसलिए किसी और का कर्तापन आने ही नहीं देता न? बाकी, जगत् है व्यवस्थित। लेकिन कर्तापन की वजह से कल्पना उत्पन्न हो ही जाती है। अकर्ता हो जाए तभी से हल आएगा। तब तक क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं जाएँगे, भय नहीं जाएगा। अशुभ का कर्तापन छोड़कर शुभ का कर्ता बने, तब भी कर्ता है।

इससे संकल्प-विकल्प हुए बगैर रहेंगे ही नहीं। और यह 'व्यवस्थित' समझ में नहीं आता इसलिए ऐसा सोचता है कि 'मेरा क्या होगा।'

आप्तसूत्र- 2603

'व्यवस्थित' के ज्ञान का आधार और खुद के स्वरूप की जागृति, इनके आधार पर पूरी तरह से संयम का पालन किया जा सकता है।

एक व्यक्ति ने कहा कि मुझे व्यवस्थित का नियम समझाइए। तब मैंने उसे बताया कि 'गाड़ी में पाँच लोग जा रहे हों और तेरा कान पकड़कर तुझे गाड़ी में से उतार दें। तब भी ऐसा लगना चाहिए कि, 'ओहोहो! यह आदमी नहीं उतार रहा है, यह तो व्यवस्थित उतार रहा है।'

बैठाते समय वह कहे कि 'बैठिए' और फिर कहे 'चंदूभाई, उतर जाओ।' तो चंदूभाई को तुरंत ही ज्ञान हाज़िर हो जाना चाहिए कि 'व्यवस्थित' ऐसा कह रहा है कि 'आप उतर जाओ।' किसका नाम देना है?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित का नाम देना है। व्यवस्थित कह रहा है, 'उतर जाओ।'

दादाश्री : व्यवस्थित उतरने को कह रहा है। वापस यदि कुछ दूर जाकर वह कहे कि, 'नहीं, नहीं, यह रहने दो।' वह व्यक्ति कहे कि 'मैं तो नहीं आ सकता।' तब वापस चंदूभाई से वह कहे कि, 'चलो, तो फिर आप वापस जाओ।' चंदूभाई को ऐसा समझना है कि 'मुझे व्यवस्थित ने बुलाया।' और व्यवस्थित बुलाता है तो व्यवस्थित के अनुसार बैठना ही चाहिए हमें। कुछ देर बाद वापस एक फर्लांग जाने बाद में, कोई और उनका जान पहचान वाला मिल जाए और वह फिर से कहे कि, 'ऐसा करो चंदूभाई, आप उतर जाओ।' तब चंदूभाई को समझना चाहिए कि, 'मुझे व्यवस्थित ही उतार रहा है।' वहाँ पर मुँह नहीं फुलाना है। व्यवस्थित उतारे उसमें मुँह क्या फुलाना? और फिर उतर जाना। कुछ दूर जाकर वापस वह व्यक्ति कहे कि 'नहीं मैं आ सकूँगा, रहने दो न।' और वापस चंदूभाई से कहे, 'चंदूभाई वापस आ जाओ, वापस आ जाओ।' तब भी ऐसा समझना कि, व्यवस्थित ने बुलाया है। यदि नौ बार ऐसा हो तब दादा की परीक्षा में पास हो जाओगे, वीतरागता की परीक्षा में। 'नौ बार में भी आपका मन नहीं बदलना चाहिए', ऐसा कहा है सभी को। यह व्यवस्थित का ज्ञान इतना अच्छा है! इंसान कुछ भी नहीं कर सकता। व्यवस्थित ही यह सब करता है और बिना बात के मुँह चढ़ाकर कहता है, 'मुझे नहीं आना, जाओ आप।' दो-चार बार निकालने पर उसकी साहजिकता टूट जाती है।

प्रश्नकर्ता : अरे, ऐसा कहते हैं, 'आप क्या समझते हो? क्या मैं कुत्ता हूँ जो मुझे हड़का रहे हो?'

दादाश्री : व्यवस्थित करता है और लोग ऐसा मानते हैं कि यह कर रहा है। वह निमित्त है, उसे इस तरह से नहीं काटना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह तो आपने व्यवस्थित की ग़ज़ब की बात बताई है, इस उदाहरण से।

दादाश्री : नौ बार उतारे तब भी वह नहीं उतार रहा 'व्यवस्थित उतार रहा है।' उसके हाथ में क्या है? संडास जाने की शक्ति भी नहीं है, वह बेचारा क्या कर सकता है? क्या वह उतार

रहा था? आगे कहीं उसकी मोटर (कार) टकरा जाए तो वह मर जाएगा!

नौ बार का नियम बताया है। मैंने कहा है कि नौ बार तक यदि यह व्यक्ति संभाल ले तो मैं समझूँगा कि वह मेरे ज्ञान में पास हो गया है। हो गया कम्प्लीट (पूरा)। दो-चार बार तो धीरज रह सकता है लेकिन फिर चेहरे पर बदलाव आता जाता है। नौ बार गाड़ी में बैठे और नौ बार उतार दे, तब भी व्यवस्थित का ज्ञान न चूके, उसे कहेंगे अपना ज्ञान! व्यवस्थित उतारता है और व्यवस्थित ही चढ़ाता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा बिल्कुल पक्का हो जाएगा।

दादाश्री : ऐसा हो जाए तभी काम का है! राग-द्वेष नहीं होंगे, निरंतर वीतरागता रहेगी, ऐसा है यह विज्ञान। व्यवस्थित के आधार पर संयम का पालन हो सकता है। व्यवस्थित के ज्ञान का आधार और खुद के स्वरूप की जागृति के आधार पर पूरी तरह से संयम का पालन किया जा सकता है। आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो एम.डी. से भी बड़ी परीक्षा है।

दादाश्री : हाँ, यह तो अठारह-बीस साल पहले बताया था। एक भाई की गाड़ी सत्संग के लिए यहाँ से, पावागढ़ और अन्य जगह जा रही थी, उस समय एक-दो बार उतारा गया था। उस समय सब से कह दिया था कि अगर आपको कोई उतार देता है तो यही मानना चाहिए कि व्यवस्थित ही उतार रहा है। नौ बार उतारे और नौ बार चढ़ाए तो अंदर ऐसा नहीं होना चाहिए कि इन्होंने मुझे क्यों उतारा! और जब फिर से बुलाएगा तो आपका मुँह बिगड़ा हुआ दिखाई देगा, कद्दू जैसा। हाँ, वह कौन है उतारने वाला? और व्यवस्थित उसे बुलाता है। व्यवस्थित बुलाता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बुलाता है।

दादाश्री : इस हद तक व्यवस्थित का कर्तव्य है, ऐसा हमने देखा है। इसलिए हम गारन्टी देते हैं न! और सिर्फ व्यवस्थित ही ऐसा है कि किसी का गुनाह नहीं दिखाएगा। यह व्यवस्थित है, ऐसा मैंने कहा है न! व्यवस्थित का कोई स्वार्थ नहीं होता, वह वीतरागता से देखता है।

व्यवस्थित समझ में आ जाए तो बहुत काम *निकाल* देगा। वर्ना अगली बार जब वह बुलाएगा न, तो मुँह ऐसा फूला हुआ दिखाई देगा! 'अरे भाई, घड़ी भर में कैसे फूल गया?'

प्रश्नकर्ता : दादा, कोई बहुत बड़ा साधक हो तो दो-तीन बार ठंडा रह सकता है, लेकिन चौथी बार में तो फिर वह एक साथ सब सुना देगा।

दादाश्री : हाँ, इसलिए इसमें धीरज रखने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा खुलासा प्रत्यक्ष सजीवन मूर्ति के अलावा और कहाँ मिल सकता है?

दादाश्री : हाँ। किताबों में नहीं हो सकता न! किताबों में नहीं हो सकता। यदि किताबों में होता तो सभी वीतराग ही बन जाते न! व्यवस्थित समझ जाते तो वीतराग ही बन जाते न सभी! यह शास्त्रों में नहीं है? मैं जो बताता हूँ न, वह मार्ग शास्त्रों में भी नहीं है। शास्त्रों में तो साधन

बताए गए हैं कि ऐसा करना, वैसा करना। यहाँ पर कर्तापन का मार्ग नहीं है। यह समझ का मार्ग है। कर्तापन से आगे निकल चुके हैं हम, भ्रांति से आगे निकल चुके हैं। अत: बात ही अलग है न!

आप्तसूत्र- 2958

'शुद्धात्मा' के अलावा का भाग, प्रकृति है। प्रकृति और बाहर के सभी संयोग मिलकर जो कार्य करते हैं, वह 'व्यवस्थित' कहलाता है।

शुद्धात्मा के अलावा और कौन सा भाग बचा? प्रकृति बची। वह गुनहगारी है। प्रकृति जो कुछ भी करती है उसमें हमें ऐसा भी नहीं कहना है कि 'तू ज़ोर लगाकर कर' और ऐसा भी नहीं कहना है कि 'मत कर'। यदि हम ज्ञाता-द्रष्टा रहें तो वह 'व्यवस्थित' है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति और व्यवस्थित के बीच में क्या कोई संबंध है?

दादाश्री : दोनों में संबंध है। सच्चा संबंध इनके बीच ही है। दोनों के बीच सच्चा संबंध ही है। यह तो यदि अंहकार दखलंदाज़ी न करे तो उस समय वह सब व्यवस्थित ही है। लेकिन अहंकार जीवित है न!

प्रश्नकर्ता : और अभी तो जीव जो कुछ भी भोग रहा है, वह उसकी प्रकृति के अनुसार उसका व्यवस्थित है?

दादाश्री : प्रकृति और व्यवस्थित, दोनों एक ही हैं। लेकिन जो अहंकार है न, वह दखल करता है, प्रकृति नहीं रहने देता। अत: व्यवस्थित नहीं कहा जा सकता। हम अहंकार निकाल देते हैं उसके बाद यदि व्यवस्थित कहें तो, वह अलग है। शुद्धात्मा के अलावा बाकी सब प्रकृति है, जो कुछ भी करता है वह सारी प्रकृति है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित शक्ति और प्रकृति में क्या फर्क है?

दादाश्री : व्यवस्थित शक्ति और प्रकृति में इतना ही फर्क है कि प्रकृति अहंकार सहित है, इसलिए व्यवस्थित को बदल देती है। अत: यदि बीच में से अहंकार को निकाल दें तो फिर व्यवस्थित ही है। दखल करने वाले को निकाल दें, यदि कोई दखल करने वाला न रहे तो सब व्यवस्थित है। दखल करता है, इसीलिए यह संसार कायम है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रकृति माइनस अहंकार, इज़ इक्वल टु व्यवस्थित शक्ति, यह ठीक है?

दादाश्री : हाँ, अंदर यह जो अहंकार है न, वह दखल करता है। इसीलिए यह संसार कायम है, वह यदि दखल नहीं करे तो कोई हर्ज नहीं है। इस ज्ञान के बाद आप में कोई दखल करने वाला नहीं है इसलिए व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : इस ज़िंदगी में व्यवस्थित शक्ति के ताबे में क्या है और अपने ताबे में क्या है?

दादाश्री : पूरा ही भौतिक व्यवस्थित के ताबे में है और अपने ताबे में जो है वह रियल है। जागृति सारी रियल की है, वह सब अपने ताबे में है और भौतिक सारा उनके ताबे में है।

ये चंदूभाई ही व्यवस्थित के ताबे में हैं। उसके लिए हम कहते हैं कि, 'मैं चंदूभाई हूँ।' उसी के झगड़े हैं। अब 'आपको' अपना स्वरूप

मिल गया है, इसलिए आप अपने घर में रह सकते हो। अब, जिसे स्वरूप नहीं मिला है उसे तो ऐसा ही रहता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ' और 'मैं कर रहा हूँ।'

प्रश्नकर्ता : तो आत्मा और व्यवस्थित शक्ति के बीच की लिंक समझाइए।

दादाश्री : इस संसार का जो पूरा व्यवहार है, वह व्यवस्थित चला लेगा और जो जागृति है, जो पुरुषार्थ है, पाँच आज्ञा का पालन करना, आपका काम है। बाकी का सब आपका काम नहीं है। यह व्यवस्थित के ताबे में हैं।

अब आप शुद्धात्मा हो गए। अब यह संसार क्या है? तब कहते हैं, व्यवस्थित के अधीन है। उसे तू देख। जितना उतना सब तू देख। तो फिर सारा धीरे-धीरे सहज भाव से चलता रहेगा और तू ज्ञाता-द्रष्टा में रह सकेगा, स्व-उपयोग में! वे इतना ही कहना चाहते हैं। तब पूछे कि 'उसमें यदि 'किसी ने मेरा मज़ाक उड़ाया?' तो कहते हैं, 'समभाव से *निकाल* कर देना।' समभाव से *निकाल* करके काम लेना, कोई कुछ भी करे फिर भी। तू बाहर गया और ताला तोड़कर तेरा सबकुछ चोरी कर जाए और तूने आकर देखा तो कुछ भी नहीं 'व्यवस्थित'!

आप्तसूत्र- 3429, 3431

'हमारी' 'पाँच आज्ञा' से बाहर इस जगत् का एक भी परमाणु नहीं है! 'हमारी' एक ही आज्ञा का यदि पूर्ण रूप से पालन किया जाए न तो एकावतारी हुआ जा सकता है, ऐसा है! उसके बाद जिसकी जैसी समझ। लेकिन यदि अबुध बनकर काम निकाल ले तो।

प्रश्नकर्ता : आप जो कहते हैं, वह इस तरह से समझ में आता है कि आपने जो ज्ञान दिया है, उस ज्ञान के बाद से अब कुछ भी नहीं करना है। बस प्रकृति जो कुछ भी कर रही है, उसे 'देखते' रहो।

दादाश्री : 'देखते' रहो। अब कुछ नहीं करना है, फिर भी प्रकृति के भाग अलग-अलग तरह के होते हैं। प्रकृति तो यदि आधे इंच के पानी का पाइप हो, और उस पर उँगली रखेंगे तो वह टिकी रहेगी। लेकिन किसी के कर्म यदि ज़्यादा हों, डेढ़ इंच का पाइप हो तो उँगली खिसक जाएगी, खिसक जाए तो ऐसा कहा जाएगा कि प्रकृति खपी। प्रकृति रही और टाइम चला गया इसलिए फिर से खपाना बाकी रहा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब आप ज्ञान देते हैं, उस समय यह *लक्ष* दे देते हैं। वह *लक्ष* देने के बाद से तो मात्र प्रकृति ही बची न?

दादाश्री : हाँ, बाकी का कुछ भी नहीं बचा।

प्रश्नकर्ता : अब जो प्रकृति बची है, उस प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है कि वह सहज भाव से विसर्जित होती रहती है।

दादाश्री : बस, अब वह विसर्जित ही होती रहेगी।

प्रश्नकर्ता : तो अब आप हमें जो आधार देते, वह पाँच आज्ञा का आधार है।

दादाश्री : पाँच आज्ञा का आधार इसलिए देते हैं ताकि आप पर अब बाहर का असर न हो। यानी कि प्रोटेक्शन (रक्षण)है वह!

प्रश्नकर्ता : तो अंदर से तो अब कोई भी अड़चन डालने वाला रहा ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, कोई भी नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : और यह बाहर की अड़चने न हो उसके लिए...

दादाश्री : बाहर क्लियरन्स (साफ) रह पाए, उसके लिए पाँच आज्ञा है। क्योंकि बाहर, जहाँ भी देखो वहाँ पूरी दुनिया कुसंग है। इसलिए कुसंग का असर यानी ज़हर (पोइज़न) न हो जाए, उसके लिए पाँच आज्ञा हैं।

अत: डिस्चार्ज अपने आप ही चलता रहेगा। ये तो चलाने जाते हैं, उसके मालिक बनते हैं और मालिक बने तो मार खाओ। हम गाड़ी में बैठ जाते हैं, फिर उसी में सो जाते हैं, उसके बाद में, क्या पता लगाने जाते हैं, कि नीचे कितने पहिए चल रहे हैं? कितनी स्प्रिंगें खचाक-खचाक कर रही हैं? भाई आराम से सो ही जाता है हैं, लो! उसी तरह से यह डिस्चार्ज है, डिस्चार्ज तो अपने आप ही चलता रहेगा। सोने के बाद भी चलता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : अभी तक यही मान्यता थी कि 'किए बिना कुछ भी नहीं हो सकता।'

दादाश्री : हाँ, ऐसा। वे सब जो मान्यताएँ और रोंग बिलीफें बैठ गई हैं, वे अभी भी हटती नहीं है। देहाध्यास चला गया लेकिन देहाध्यास की मान्यताएँ नहीं जातीं।

यह तो बल्कि दही में हाथ डालकर गड़बड़ करता है। हमने कहा हो, 'पूरी रात सोए रहना। दही को देखने मत जाना।' फिर भी दो बजे उठकर कहता है, 'ज़रा देख लेता हूँ, जम गया या नहीं?' उससे फिर गड़बड़ हो जाती है और दही अच्छी तरह से नहीं जमता। वर्ना यह तो विज्ञान है! तुरंत फल देता है! आज्ञा में ही रहना है।

विज्ञान अपना फल दिए बगैर रहेगा नहीं। सहज भाव से हल आता ही रहेगा। आपको क्या व्यवस्थित का थोड़ा-बहुत अनुभव नहीं है? सहज भाव से हल आता है ऐसा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हल आता है। ऐसा अनुभव होता है कि सहज भाव से सब हल हो रहा है। ऐसा एक समझ में आ गया है कि उस तरफ का सारा कार्य व्यवस्थित करता ही रहता है।

दादाश्री : व्यवस्थित समझ में आ जाए और उसके साथ पाँच आज्ञा का पालन करो न, तो सहज भाव से सब हल होता रहेगा। व्यवस्थित तो निर्भय बना देता है, बिल्कुल निर्भय! चिंता रहित बनाता है और यह व्यवस्थित का विशेष ज्ञान है। अत: इस काल में यह हमारे अनुभव वाला विशेष ज्ञान दिया है।

आप्तसूत्र- 2718

यह तो 'साइन्स' (विज्ञान) है! भगवान का 'साइन्टिफिक' प्रयोग है। कर्म भी नहीं है और कर्ता भी नहीं है, कोई बाप भी नहीं है। सिर्फ 'साइन्स' है!

प्रश्नकर्ता : दुनिया अर्थात् व्यवस्थित की लेबोरेटरी (प्रयोगशाला) ही कही जाएगी न?

दादाश्री : हाँ, लेबोरेटरी की तरह है। इस लेबोरेटरी में आत्मा को क्या माना जाएगा? योजक के रूप में और यह है योजना। इसमें यह चीज़ डालते हो, वह चीज़ डालते हो। वह खुद को नहीं डालनी पड़ती, अपने आप ही डल जाती है। उससे जो केमिकल इफेक्टस (रसायन की असरें) होता है, उसमें भ्रांति से वह खुद उँगली

डाल देता है और जल जाता है। जबकि साइन्टिस्ट (विज्ञानी) हाथ नहीं डालते, ज्ञानी भी हाथ नहीं डालते। सिर्फ देखते ही रहते हैं जबकि ये लोग हाथ डाल देते हैं, इमोशनल हो जाते हैं तो फिर जल जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : तो फिर पूर्वकर्म के हिसाब से जो जीवन मिला है, व्यवस्थित के हिसाब से वह तो भुगतना ही है तो फिर इस जीवन में ऐसा कुछ कर्म कर सकता है जिससे व्यवस्थित में कोई बदलाव हो सके?

दादाश्री : कुछ भी बदलाव नहीं होगा। यहाँ पर जन्म लिया है तब से लेकर अंतिम स्टेशन पर पहुँचने तक, जब अर्थी निकलेगी तब तक सब अनिवार्य है। और भ्रांति से उसे ऐसा मानता है कि मेरी मर्ज़ी से है। मर्ज़ी से माना है इसीलिए भ्रांति है! यह है अनिवार्य। यह ऐसा है कि किए बिना चलेगा ही नहीं। क्योंकि उसकी डिज़ाइन बन चुकी है, उसकी योजना बनाई जा चुकी है और वह योजना इस लाइफ में रूपक में आई है इसीलिए बन चुकी योजना के अनुसार ही होता रहेगा, उस रूपक में कोई भी बदलाव नहीं हो सकेगा और वह अनिवार्य है। अत: अगर आप बदलना चाहोगे तब भी कुछ नहीं बदलेगा।

प्रश्नकर्ता : क्या मुक्ति भी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल ऐविडेन्स के आधार पर ही है?

दादाश्री : हाँ, सभी कुछ साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल ऐविडेन्स के आधार पर ही है। यानी कि साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्सस के आधार के बिना तो कोई भी चीज़ नहीं है। यह जन्म भी उसी की वजह से है, मृत्यु भी उसी की वजह से है, शादी भी उसी की वजह से है, सबकुछ उसी की वजह से है। मुक्ति भी उसी की वजह से है।

सही चीज़ को जानना तो पड़ेगा न! अंत में चाहे मार खाकर भी लेकिन एक दिन जानना तो पड़ेगा न! अनंत जन्मों में, इस जन्म में नहीं तो दूसरे जन्म में, तीसरे जन्म में लेकिन जानना तो पड़ेगा ही न! कब तक अंजान रहोगे?

आप्तसूत्र- 3776

'इस जगत् में जो कुछ भी किया जाता है, वह इस जगत् को पुसाए या न भी पुसाए, फिर भी मैं कुछ भी नहीं करता हूँ।' यदि निरंतर ऐसा ध्यान रहे तो वह 'केवलदर्शन' है।

इस जगत् में जो कुछ भी किया जाता है, अच्छा या बुरा, चाहे जो कुछ भी किया जाए, वह इस जगत् को पुसाए यानी कि इस तरफ की गली के लोग कहेंगे, 'नहीं, नहीं पुसाता' और उस तरफ वालों को हमारा पुसाए तो उसमें हमें कोई हर्ज नहीं है। जगत् को पुसाए या न भी पुसाए फिर भी 'मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ', ऐसा ध्यान रहना, निरंतर ऐसा ध्यान में रहना, वही केवलदर्शन है। कितना अद्भुत वाक्य है! निरंतर ध्यान में रहना चाहिए। और वह हम सब से पहले दे ही देते हैं सभी को।

ये चंदूभाई सुबह उठकर जो कुछ भी करते हैं, तो उसमें आपने एक बाल बराबर भी कुछ नहीं किया है। यदि आपको ऐसी श्रद्धा बैठ जाए, ऐसी प्रतीति सेट हो जाए कि 'मैं कुछ भी नहीं करता हूँ', तब केवलदर्शन होगा।

खुद के पूर्ण प्रतीति हो गई, 'मैं कर्ता नहीं

हूँ' ऐसी प्रतीति हो गई। इस जन्म से अभी तक की किसी भी चीज़ का 'मैं कर्ता नहीं हूँ', ऐसी प्रतीति हो जाना, इसी को कहते हैं केवलदर्शन। लोगों का कर्तापन नहीं जाता, नहीं छूटता। हम छुड़वाए तब भी नहीं छूटता।

क्रमिक में, पहले ज्ञान, उसके बाद दर्शन। अपने अक्रम में पहले दर्शन, उसके बाद ज्ञान। क्रमिक मार्ग में ज्ञान को बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है, उसके बाद में आत्मा दर्शन में आता है। वहाँ पर ज्ञान को ज्ञान से नहीं समझा जाता। जहाँ त्याग है, वहाँ ज्ञान नहीं है। जहाँ पर किंचित्मात्र भी ऐसा रहे कि 'मैं इसका कर्ता हूँ' वहाँ पर आत्मा अधूरा रहता है, ज्ञान और दर्शन अधूरा रहता है, केवलदर्शन नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : यदि निरंतर ऐसा भाव रहे कि 'मैं कुछ भी नहीं करता' तो क्या केवलदर्शन हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, क्योंकि तीर्थंकर वर्तन को नहीं देखते हैं। वे भाव सत्ता को देखते हैं। अत: हमें तीर्थंकरों का मान्य है। लोगों का हम कहाँ मानें?

चंदूभाई चाहे कुछ भी करें, अच्छे या बुरे में यदि तुझे निरंतर ऐसा ध्यान रहे कि 'मैं कुछ भी नहीं करता' तो तू महावीर बन रहा है। बहुत बड़ा वाक्य है यह!

आप्तसूत्र- 2953

यदि 'व्यवस्थित' 'एक्ज़ेक्ट' (पूरी तरह से) समझ में आ जाए तो फिर आप पूर्ण परमात्मा ही बन जाओगे! जितना-जितना 'व्यवस्थित' समझ में आता जाता है, उतना ही मनुष्य में से परमात्मा होता जाता है!

ऐसा है कि यदि हमारे द्वारा दिए गए 'व्यवस्थित' को एक्ज़ेक्ट समझ ले तो दूसरी तरफ केवलज्ञान हो जाएगा। जितना समझ में आएगा, उतना फिट होता जाएगा और उसकी दूसरी तरफ सामने चलकर केवलज्ञान आता जाएगा। यह हमने पूर्ण रूप से हमारी समझ में आने के बाद दिया है और यह हमारी कितने ही जन्मों की खोज है।

जगत् के लोग कहते हैं कि 'केवलज्ञान' करने की चीज़ है। नहीं, वह तो जानने की चीज़ है। करने की चीज़ तो कुदरत चला रही है। करना ही भ्रांति है। यह शक्ति कितने ऐश्वर्य सहित आपके लिए कर रही है! उस शक्ति को तो पहचानो। यह तो 'व्यवस्थित' शक्ति का काम है।

व्यवस्थित तो बहुत बड़ी चीज़ है। एक तरफ व्यवस्थित को समझना और दूसरी तरफ केवलज्ञान होना, दोनों साथ में होते हैं। अत: इस व्यवस्थित को पूरी तरह से समझना चाहिए। यदि व्यवस्थित समझ में आ जाए तो कल्याण हो जाएगा! जिस दिन व्यवस्थित पूरी तरह से समझ में आ जाएगा, उस दिन केवलज्ञान होकर रहेगा। व्यवस्थित के पूर्ण ज्ञान को ही केवलज्ञान कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित का पूर्ण ज्ञान ही केवलज्ञान है?

दादाश्री : हाँ, केवलज्ञान। यह सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल ऐविडेन्स है, अवस्था मात्र कुदरती रचना है, जब ऐसा फिट हो जाएगा तब केवलज्ञान उत्पन्न हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जब सौ प्रतिशत व्यवस्थित में आ जाते हैं तब यह कर्तापन चला जाता है?

दादाश्री : व्यवस्थित सौ प्रतिशत समझ में आ जाए, व्यवस्थित का उघाड़ हो जाए, व्यवस्थित

एक्ज़ेक्ट समझ में आ जाए तो केवलज्ञान हो जाएगा। तब तक जितना समझ में आता जाता है, धीरे-धीरे उतना ही केवलज्ञान खुलता चला जाता है। व्यवस्थित, बुद्धि से नहीं समझा जा सकता, यह दर्शन से समझा जा सकता है।

इस जगत् में जिसे कुछ भी नहीं आता हो यदि सिर्फ इतना समझ में आ जाए कि 'व्यवस्थित है' तो ऐसा कहा जाएगा कि उसे केवलज्ञान हो गया। यह व्यवस्थित, व्यवस्थित ही है, लेकिन व्यवस्थित समझ में आ जाना चाहिए, अनुभव में आ जाना चाहिए। और यदि यह व्यवस्थित समझ में आ जाए तो फिर कुछ भी समझना बाकी नहीं रहेगा। व्यवस्थित को पूरी तरह से समझ जाए तो पूर्ण रूप से ज्ञाता-द्रष्टा रह सकेगा।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित अच्छी तरह से समझ में आ जाए तो केवलज्ञान है' यह ज़रा और अधिक समझाइए।

दादाश्री : व्यवस्थित में जितना समझ में आता है न, उतने ही केवलज्ञान के अंश खुल जाते हैं। फिर उस तरफ देखने का ही नहीं रहता। जिस ज्ञान में कुछ देखने की ज़रूरत नहीं रहती, वह केवलज्ञान कहलाता है। अत: एक तरफ जब यह पूरा ही खत्म हो जाता है न, तब दूसरी तरफ केवलज्ञान कम्प्लीट हो जाता है।

इस व्यवस्थित को इस हद तक समझते जाना है कि अंतिम व्यवस्थित, केवलज्ञान उत्पन्न कर दे! यह व्यवस्थित मेरी इतनी अच्छी खोज है, यह अद्‌भुत खोज है! यह व्यवस्थित तो पूरी तरह से समझ में आ गया है न?

प्रश्नकर्ता : पूरी तरह से तो कैसे कहा जा सकता है?

दादाश्री : जैसे-जैसे व्यवस्थित के पर्यायों समझ में आते जाएँगे, जितने पर्याय समझ में आते जाएँगे उतना अधिक लाभ होगा। इस व्यवस्थित के बारे में सभी को समझ में आता है, लेकिन हर किसी को अपने पर्यायों के अनुसार। उसके बाद में जिस दिन सभी पर्याय समझ में आ जाएँगे तो उस दिन केवलज्ञान हो चुका होगा। मुझ में भी चार डिग्री तक के पर्याय कम हैं। अत: व्यवस्थित समझने जैसी चीज़ है।

जितनी रोंग मान्यताएँ हटती हैं उतनी ही जागृति बढ़ती है और उतना ही 'व्यवस्थित' समझ में आता है उसे! जैसे-जैसे रोंग मान्यताएँ हटती हैं वैसे-वैसे व्यवस्थित समझ आता जाता है और फिर जागृति बढ़ती जाती है। जब पूर्ण रूप से व्यवस्थित समझ में आ जाएगा तब पूर्णाहुति! लेकिन व्यवस्थित एकदम से समझ में नहीं आ सकता।

यदि हमारे एक-एक शब्द को समझ जाए न, एक ही शब्द को सही और अच्छी तरह से समझ जाए न, तो वह ठेठ केवलज्ञान तक ले जाएगा! लेकिन सही तरह से समझ में आना चाहिए!

हम जो ज्ञान देते हैं, वह अलौकिक ज्ञान देते हैं सभी को। 'व्यवस्थित' का यदि अर्थ समझ ले तब तो काम *निकाल* देगा।

अभी यह जो व्यवस्थित समझ में आया है न, वह तो स्थूल समझ में आया है। अभी तो पूरे ही सूक्ष्म व्यवस्थित को समझना बाकी है, उसके बाद सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम। यदि व्यवस्थित पूरी तरह से समझ में आ जाएगा तो केवलज्ञान हो जाएगा।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

9-12 अगस्त : उज्जैन तीर्थधाम में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के महात्माओं के लिए ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। जिसका 900 से ज़्यादा महात्माओं ने लाभ उठाया। पहले दिन ज्ञान की प्राप्ति करने वाले मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग के बाद, शाम को आयोजित ज्ञानविधि में 900 मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ। उसके बाद दो दिनों में पूज्यश्री के तीन सेशन हुए, ''रियल-रिलेटिव की भेदरेखा', 'नोंध से मोक्षमार्ग में जोखिम अपार'' और जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। दूसरे दिन, शाम को पूज्यश्री और महात्माओं ने प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर के दर्शन किए। दर्शन के बाद इन्फॉर्मल सत्संग, आरती और पूज्य नीरूमाँ व दादा के समय में हुए यात्रा के अनुभव की बातें हुई। अंतिम दिन पूज्यश्री के चरणस्पर्श-दर्शन से महात्माओं ने धन्यता का अनुभव किया। महात्माओं के लिए शिविर का अनुभव अलौकिक रहा। शिविर के बाद अडालज वापस आने के लिए इन्दौर एयरपोर्ट जाते समय पूज्यश्री इन्दौर के नए सत्संग सेन्टर में गए और स्थानीय महात्माओं से बातचीत की।

15 अगस्त : रक्षाबंधन पर्व पर पूज्यश्री ने त्रिमंदिर में सभी भगवंतों को, और दादा व नीरूमाँ को राखी बाँधी फिर पूजन-दर्शन किए। पर्व के अनुरूप विशेष संदेश देते हुए बताया कि दादा, नीरूमाँ और देवी-देवताओं से यही माँगना है कि मोक्षमार्ग के विघ्न दूर हों, उस तरह जागृतिपूर्वक पुरुषार्थ करने की शक्तियाँ शक्ति दीजिए। अंत में सीमंधर स्वामी व दादा की आरती हुई।

17-18 अगस्त : अडालज त्रिमंदिर संकुल में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि में पहले दिन गुजरात और अन्य राज्यों से आए मुमुक्षुओं ने विविध प्रश्न पूछकर पूज्यश्री से सही समझ प्राप्त की। ज्ञानविधि में 1300 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया है। समग्र मंदिर परिसर महात्माओं की उपस्थिति से भर गया।

24 अगस्त : इस बार अडालज त्रिमंदिर संकुल में लगातार दस दिनों के कार्यक्रम की शुरुआत जन्माष्टमी से हुई। इस दिन अडालज त्रिमंदिर में दर्शनार्थियों के लिए विशेष फिल्म 'सब का टाइम आएगा' और पपेट शो, 'कौन है कालिया नाग?' का आयोजन किया। जिससे दादा के ज्ञान का विशेष मेसेज मिला। जायजेन्टिक हॉल के स्टेज पर सुंदर भव्य हवेली का डेकॉरेशन किया गया। जहाँ ऐसी सेटिंग थी कि सभी दर्शनार्थी दर्शन करके सेल्फी ले सकें। पूज्यश्री ने भी शो देखकर सभी सेवार्थियों को प्रोत्साहन दिया। शाम को मंदिर पोडियम में दर्शनार्थियों ने पूज्यश्री के दर्शन किए और शाम की आरती भी की। रात को जायजेन्टिक हॉल में आयोजित विशेष कार्यक्रम में गायक कलाकारों ने दादा भगवान और कृष्ण भगवान के पद गाए। पूज्यश्री ने भी नए ही पद गाए। रात को 12 बजे पूज्यश्री ने मटकी फोड़ी। बालकृष्ण को झूला झुलाकर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया। उसके बाद भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करके मक्खन व मिश्री का प्रसाद चढ़ाया, उसके बाद भाव से भगवान को गले लगाया। अंत में श्रीकृष्ण भगवान की आरती हुई। महात्मा भक्ति रस में तल्लीन हो गए।

25 अगस्त - 2 सितम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल में दादानगर हॉल नई जगह पर शिफ्ट किया गया है। जो पहले से 30 प्रतिशत ज़्यादा बड़ा है। 25 अगस्त को सुबह 11 बजे पूज्यश्री के हाथों इस हॉल का उद्घाटन हुआ। उसके बाद महात्माओं के लिए बारी-बारी से सुबह-शाम दर्शन की व्यवस्था थी। पूज्यश्री ने बुज़ुर्गों और शारीरिक तक़लीफ वालों के पास जाकर उन्हें दर्शन दिए। दर्शन के दौरान महात्माओं ने सामूहिक रूप से विधियाँ, असीम जय जयकार, आरती की और पद गाए। 26 तारीख़ से आठ दिनों तक पर्यूषण-पारायण था। जिसमें आप्तवाणी श्रेणी-14 भाग-1 का वांचन हुआ। वांचन के बीच आप्तसंकुल के भाईयों-बहनों ने पूज्यश्री से प्रश्न पूछे। ब्रेक के बाद के प्रश्नोत्तरी सत्संग में महात्माओं ने प्रश्नों के समाधान पाए। 31 तारीख़ को रात को आयोजित गरबा में पूज्यश्री ने दर्शन देकर, महात्माओं को आनंदित कर दिया। पारायण में बहुत सूक्ष्म होने

के बावजूद भी टॉपिक 'आत्मा का विभाव/ विशेषभाव' का विशेष स्पष्टीकरण मिलने से महात्माओं को बहुत आनंद हुआ। अंतिम दिन पूज्यश्री और महात्माओं की उपस्थिति में कईं महात्माओं ने अपने परिवार वालों से उनके पैर छूकर माफ़ी माँगकर, आलोचना-प्रतिक्रमण किए। अंत में पूज्यश्री ने पूरी ज़िंदगी में हुए दोषों के लिए विशेष संवत्सरी प्रतिक्रमण करवाया, जिसका लाभ 12000 से ज़्यादा महात्माओं ने उठाया।

5-8 सितम्बर : लिंच (महेसाणा)में दादा भगवान परिवार के संकुल में आप्तसंकुल के भाईयों-बहनों के लिए दो-दो दिन के विशेष शिविर का आयोजन हुआ। पूज्यश्री ने हर रोज़ साधकों की उपस्थिति में भोजन किया और इन्फॉर्मल सत्संग किया। इसके अलावा साधकों ने विडियो सत्संग, सामायिक, पूज्यश्री के साथ मॉर्निंग वॉक और भोजन बनाकर पूज्यश्री को परोसने की सेवा का भी लाभ लिया।

12 सितम्बर : जूनागढ़ में निर्मित होने वाले त्रिमंदिर का भूमि पूजन पूज्यश्री के शुभ हस्तों से हुआ। इस त्रिमंदिर में 9 फुट के सीमंधर स्वामी भगवान की प्रतिमा स्थापित की जाएगी। वहाँ कई दिनों से बारिश हो रही थी और कार्यक्रम दौरान भी बारिश हुई। लेकिन सेवार्थियों ने बहुत अच्छा आयोजन करके कार्यक्रम को सफल बनाया। बारिश होने के बावजूद भी इस दिव्य अवसर को मनाने के लिए हर जगह से 4000 से ज़्यादा महात्मा आए। पूजन के बाद पूज्यश्री ने फावड़े से खुदाई करके ईंटें रखीं व सिमेन्ट डालकर चुनाई की शुभ शुरुआत की। डिम्पल भाई ने त्रिमंदिर की जगह के बारे में और किस तरह इस त्रिमंदिर का निर्माण संभव हुआ, उस बारे में बातें की। पूज्यश्री ने त्रिमंदिर का निर्माण कार्य निर्विघ्न, निरंतराय पूर्ण हो, उसके लिए प्रार्थना करवाई। अंत में सीमंधर स्वामी और दादा की आरती की गई। महात्माओं ने भी जगत् कल्याण की भावना की। सभी महात्माओं ने प्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7 से 7-30 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 तथा हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'MA TV'** पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

मालदा	दि : 22 नवम्बर	संपर्क : 6296466474	मडगाँव	दि : 7-8 दिसम्बर	संपर्क : 8698745655
कोलकाता	दि : 23-24 नवम्बर	संपर्क : 9830080820	बेलगाम	दि : 9-10 दिसम्बर	संपर्क : 9945894202
आसनसोल	दि : 25 नवम्बर	संपर्क : 6295591476	हुबली	दि : 11-12 दिसम्बर	संपर्क : 9513216111
धर्मशाला	दि : 1 दिसम्बर	संपर्क : 9805254559	बेंगलुरु	दि : 13-15 दिसम्बर	संपर्क : 9590979099
जलंधर	दि : 2 दिसम्बर	संपर्क : 9779233493	धनबाद	दि : 11 दिसम्बर	संपर्क : 9431191375
अमृतसर	दि : 3 दिसम्बर	संपर्क : 9872298125	गिरिडीह	दि : 12 दिसम्बर	संपर्क : 9122373306
लुधियाना	दि : 4 दिसम्बर	संपर्क : 9465051163	बोकारो	दि : 12 दिसम्बर	संपर्क : 7765045788
नवांशहर	दि : 5 दिसम्बर	संपर्क : 8288891118	हजारीबाग	दि : 13 दिसम्बर	संपर्क : 7033093740
चंडीगढ़	दि : 6 दिसम्बर	संपर्क : 9780732237	गढ़वा	दि : 14 दिसम्बर	संपर्क : 9801362466
चंडीगढ़	दि : 7 दिसम्बर	संपर्क : 9780732237	पटना	दि : 15 दिसम्बर	संपर्क : 9431015601
जलंधर	दि : 8 दिसम्बर	संपर्क : 9779233493	झाझा	दि : 17 दिसम्बर	संपर्क : 9801500832

पालमपुर (हिमाचल) में पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के महात्माओं के लिए आप्तपुत्र के साथ विशेष शिविर

तारीख - **29 व 30 नवम्बर - 1 दिसम्बर**,

स्थलः होटल साईं गार्डन, स्टे फ्रेस्को के पास, लोहना हिल्स, P.O.-बुन्दला टी एस्टेट, पालमपुर.

शिविर का शुल्क रु. 2000 (ठहरने और भोजन का शुल्क)

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क : जलंधर: 9779233493, चंडीगढ़ : 9780732237, धरमशाला : 9805254559

10 नवम्बर तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबादः** (079) 27540408, **मुंबईः** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्लीः** 9810098564, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडाः +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलियाः** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

27 अक्तूबर (रवि) रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

28 अक्तूबर (सोम), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 - **गुजराती नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन**

अहमदाबाद

22-23 नवम्बर (शुक्र-शनि) रात 8 से 11 - **सत्संग और 24 नवम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

25 नवम्बर (सोम) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : म्यूनिसिपल ग्राउंड, पूजन बंगलोस (राजहंस सिनेमा) के सामने, शुकन चार रस्ता, निकोल. **संपर्क :** 9327081075

विजापुर

26 व 28 नवम्बर (मंगल व गुरु) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

27 नवम्बर (रवि) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : रामबाग राधा कृष्ण मंदिर, टी.बी. होस्पिटल रोड, विजापुर, जि. महेसाणा, (गुजरात). **संपर्क :** 9879227227

मोरबी

10 डिसम्बर (मंगल) शाम 8 से 11 - **सत्संग और 11 डिसम्बर** (बुध) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

12 डिसम्बर (सोम) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : सरदार सोसायटी 1, सत्कार पार्टी प्लोट पीछे, कंडला-राजकोट बायपास, मोरबी. **संपर्क :** 9374284391

राजकोट

13-14 डिसम्बर (शुक्र-शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग और 15 डिसम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

16 डिसम्बर (सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : पारिजात पार्टी प्लोट, शीतल पार्क BRTS बस स्टोप, 150 फीट रींग रोड. **संपर्क :** 9499558183

अडालज त्रिमंदिर में सत्संग पारायण (शिविर)

21-28 दिसम्बर - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 7-30 - **आप्तवाणी-14 भाग-1 पर सत्संग सामायिक**

29 दिसम्बर - सुबह 10 से 1 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. (079) 39830400, 9924348880 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 7) पर दि. 8 दिसम्बर 2019 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

कोलकाता

14 जनवरी (मंगल) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग और 15 जनवरी** (बुध) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : विद्या मंदिर स्कूल, मोइरा स्ट्रीट, मिंटो पार्क के पास, कोलकाता. **संपर्क :** 9830131411, 8777084640

सम्मेत शिखर

22 जनवरी (बुध) दोपहर - शाम 2-30 से 6 - **ज्ञानविधि**

स्थल : सत्संग ग्राउंड, निहारिका भवन के सामने, पोस्ट-शिखरजी (मधुबन) जिल्ला: गिरिडीह. **संपर्क :** 9830131411

स्पेशियल टेलिकास्ट देखिए चेनल 'अरिहंत' पर गुजराती में तथा 'साधना' पर हिन्दी में

मुंबई त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा तथा दादाश्री 112वी जन्मजयंती

7 से 11 नवम्बर हररोज सुबह 9-30 से 12-30 तथा शाम 6-30 से 9

मुंबई त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा और परम पूज्य दादाश्री का 112वाँ जन्मजयंती महोत्सव

तारीख	समय	कार्यक्रम	स्थल
7 नवम्बर	सुबह 10 से 12-30	सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
	शाम 6-30 से 8	महोत्सव शुभारंभ	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
	शाम 8 से 9	सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
8 नवम्बर	सुबह 9-30 से 12	प्राणप्रतिष्ठा	त्रिमंदिर
	शाम 6-30 से 9	सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
9 नवम्बर	सुबह 9-30 से 12	प्राणप्रतिष्ठा	त्रिमंदिर
	शाम 6-30 से 9	सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
10 नवम्बर	सुबह 9 से 12	प्राणप्रतिष्ठा	त्रिमंदिर
	शाम 6-30 से 9	सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
11 नवम्बर	सुबह 8 से 1	जन्म जयंती निमित्ते	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
	शाम 5 से 8	विशेष पूजन-दर्शन-भक्ति	
12 नवम्बर	सुबह 11 से 12-30	आप्तपुत्र सत्संग	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड
	शाम 5-30 से 9	ज्ञानविधि	चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड

महोत्सव स्थल : चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड, कांतिपार्क रोड, सेन्ट रॉक्स कॉलेज के सामने, बोरीवली (वेस्ट), मुंबई।

त्रिमंदिर स्थल : त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनव नगर रोड, ला विस्टा बिल्डिंग के पास, काजूपाड़ा, बोरीवली (इस्ट)।

रजिस्ट्रेशन, टेन्ट (रहने का स्थल) और भोजन के लिए : चीकूवाड़ी गरबा ग्राउन्ड (प्रमोद महाजन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स), चीकूवाड़ी, बोरीवली (वेस्ट)। **संपर्क :** 9323528901-2-3

सूचनाएँ :

1. महात्मा भाईयों के टेन्ट (रहने का स्थान) ग्राउन्ड की जानकारी Akonnect और सेन्टरों द्वारा दी जाएगी। भाईयों के लिए गरबा ग्राउन्ड से टेन्ट तक आने-जाने के लिए फ्री ट्रान्सपोर्ट की व्यवस्था रहेगी।
2. आगमन के समय, रजिस्ट्रेशन और भोजन के लिए सभी को 'गरबा ग्राउन्ड' में आना होगा। जिनको टेन्ट या भोजन की व्यवस्था नहीं चाहिए। वे सीधे ही 'चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड' में जा सकते हैं।
3. तारीख 8-9-10 नवम्बर प्राणप्रतिष्ठा में सुबह पास के अनुसार, जिनकी बारी आए, उन्हें ही मंदिर परिसर में प्रवेश मिलेगा। इस के लिए पास काउन्टर, रजिस्ट्रेशन काउन्टर के पास रहेगा (गरबा ग्राउन्ड में)। जिनकी मंदिर जाने की बारी नहीं होगी, वे सब महात्मा 'चीकूवाड़ी प्ले ग्राउन्ड' के सत्संग हॉल में प्राणप्रतिष्ठा का लाइव प्रसारण देख सकते हैं।
4. जन्म जयंती के दर्शन की व्यवस्था आपके शहर/गाँव के अनुसार ICARD रहेगी। सभी को ICARD लेकर आने की विनती है। (मोबाइल में Akonnect ICARD भी चलेगा।) जिनके पास ICARD नहीं है, उनके लिए दर्शन की व्यवस्था अंत में रहेगी। व्हील चेयर (शारीरिक तकलीफ) वालों के लिए दर्शन की व्यवस्था शाम 5 बजे रहेगी (सूचना के अनुसार)।
5. महोत्सव के समय सभी के लिए त्रिमंदिर दर्शन का समय इस अनुसार रहेगा : तारीख : 8-9-10 दोपहर 2 से रात को 9 बजे तक। तारीख 11 नवम्बर आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीयों द्वारा मंदिर के द्वार खुले किए जाएगे, उसके बाद सुबह 10 बजे से रात को 9 बजे तक त्रिमंदिर में दर्शन कर सकते हैं।
6. अभी महोत्सव के लिए रजिस्ट्रेशन बंद हो चुके हैं। अब होने वाले रजिस्ट्रेशन वेटिंग में रहेंगे। उसके लिए Akonnect देखे।
7. बाहर से अपनी कार लेकर न आएँ, तो अच्छा रहेगा, क्योंकि पार्किंग की जगह सीमित ही है और गलत जगह पर पार्क करने पर बहुत फाइन लगता है।

अक्तूबर 2019
वर्ष-14 अंक-12
अखंड क्रमांक - 168

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

मुबंई जन्म जयंती और त्रिमंदिर का स्थान दर्शाता हुआ नक्शा

अधिक जानकारी के लिए पेज नंबर ३० देखें

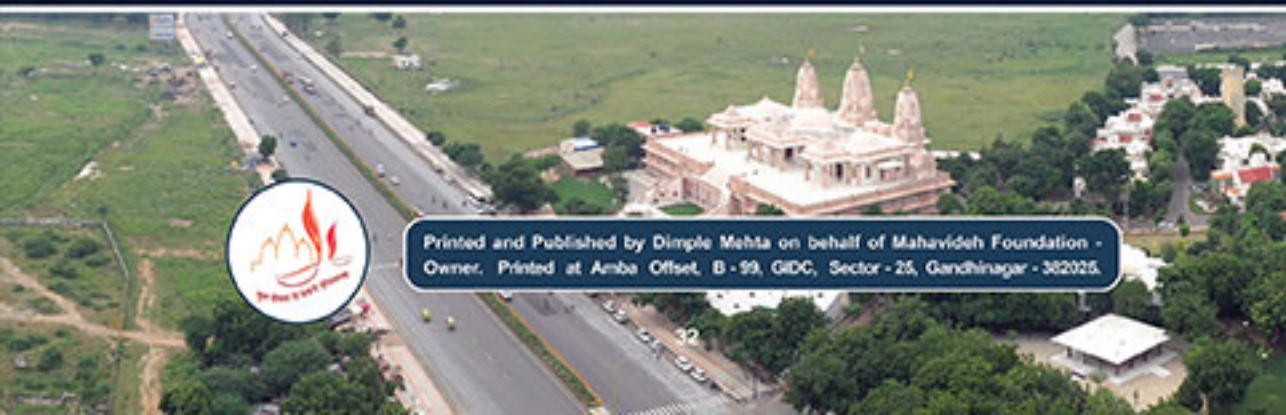

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.